जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

हिण्डौन सिटी

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

हिण्डौन सिटी, शनिवार 23 सितम्बर, 2023

30 सितम्बर तक फिर से 5% रेट बढ़ेगी

FIXED PRICE

KEDIA सेजस्थान

KOTHI & WALK-UP APARTMENT

अजमेर रोड़, जयपुर

NO MIDDLE-MEN DIRECT TO CUSTOMER

2 साइड ओपन कोठी और फ्लैट्स | 60 एमेनिटीज

PROPOSED FIXED RATE & RENTAL 1.5 गुना

बड़ी-बड़ी कोठी बड़े-बड़े फ्लैट		अगस्त की रेट	सितम्बर की रेट	अक्टूबर की रेट	नवम्बर की रेट	दिसम्बर की रेट	जनवरी की रेट	पजेशन की रेट	POSSESSION DEC. 2025
युनिट टाइप	साइज	NPO NEW PRODUCT OFFER	+5%	+10%	+15%	+20%	+25%	+50%	पजेशन के बाद रैंटल
2 BHK (GF) अपार्टमेंट	1350 Sq Ft	45 L	47.25 L	49.50 L	51.75 L	54 L	56.25 L	67.50 L	22,000
3 BHK (SF) अपार्टमेंट	1900 Sq Ft	50 L	52.50 L	55 L	57.5 L	60 L	62.50 L	75 L	25,000
3 BHK (FF) अपार्टमेंट	1900 Sq Ft	55 L	57.75 L	60.5 L	63.25 L	66 L	68.75 L	82.50 L	28,000
3 BHK BIG कोठी	2000 Sq Ft	60 L	63.00 L	66 L	69 L	72 L	75 L	90 L	30,000
4 BHK BIGGER कोठी	2325 Sq Ft	70 L	73.50 L	77 L	80.50 L	84 L	87.50 L	105 L	40,000
4 BHK BIGGEST कोठी	3200 Sq Ft	100 L	105 L	110 L	115 L	120 L	125 L	150 L	50,000

KEDIA®

1800-120-2323

info@kedia.com www.kedia.com

www.rera.rajasthan.gov.in | RERA No. RAJ/P/2023/2387

WALKTHROUGH QR CODE | DOWNLOAD BROCHURE | LOCATION QR CODE | ROUTE MAP | SITE TOUR 360 DEGREE

*T&C Apply

विचार बिन्दु

निरंतर विकास जीवन का एक नियम है। और जो भी व्यक्ति खुद को सही दिखाने के लिए अपनी रूढ़िवादिता को बरकरार रखने की कोशिश करता है वो खुद को एक गलत स्थिति में पंहुचा देता है। –महात्मा गांधी

तेरे द्वार खड़ी सरकार भक्त भर दे रे तिजोरी

सभी जानते हैं कि सरकार की शासन प्रशासन व्यवस्था जनता के द्वारा दिए गए (अरे नहीं, लिए गए) टैक्स से चलती है। भले ही आपके वोट द्वारा तथाकथित चुने हुए विधायक और सांसद जब सदन में बैठते हैं तो वह सरकार के हिस्से हो जाते हैं चाहे पक्ष में हों अथवा विपक्ष में। पक्ष में बैठ कर तो सरकार की हां में हां और विपक्ष में होने पर चुपचाप वाद-विवाद सुनना या हुल्लड़ मचाना। चुप रहने पर भी लगता ऐसा है कि सरकार के पक्ष में हैं। इस स्थिति का लाभ सरकार उठाकर अपने हित (पार्टी हित) के प्रस्ताव पास कर लेती है। मुफ्त बांटने की सभी योजनाओं में बहुधा ऐसा ही होता है। जब सरकार कोई टैक्स वृद्धि करना चाहती है अथवा लुटे-पिटे अपने लोगों को कुछ मुफ्त देने का प्रयास करती है, भले ही आम जनता के लिए ऐसे प्रस्ताव अहितकर हों। कारण साफ़ है कि जब जनता चिल्लायेगी तो विपक्ष को उसका राजनीतिक लाभ मिलेगा। इसलिए जनता के अहितकर कुछ मुद्दों पर सदन में अधिक विरोध नहीं होता।

अभी इसी अखबार के सितम्बर 13 के अंक में श्री सी ए शंकर अग्रवाल द्वारा बहुत सूंदर सम्पादकीय लिखा है शीर्षक है "सब कुछ मुफ्त बांटने की वृति के कारण राजस्थान सरकार का बढ़ता कर्ज चिंता का विषय:" लेख का विषय सामग्री और विवेचन अर्थपूर्ण और सराहनीय है। यहाँ एक लेखक की व्यथा साफ़ दिखती है। लेकिन राजस्थान की प्रजा से जैसा वांछित है, वे न तो लेख पढ़ते और न ही कोई विरोध। इसलिए अनेक मुद्दों पर न तो उनकी कोई सोच होती है और न ही कोई प्रतिक्रिया। उक्त लेखक ने कुछ वर्षों का प्रदेश पर बढ़ता ऋण दर्शाया है। लगातार बढ़ते ऋण से प्रदेश पर वर्ष 2022-2023 में 537013 करोड़ रुपये अर्थात पांच लाख सैंतीस हज़ार करोड़ का कर्जा है। पूर्व के ऋणों का पता नहीं कि चुकाए गए या नहीं ? कुछ भी हो सरकार को इस बढ़ते ऋण से कोई चिंता नहीं प्रदेश के मुख्यमंत्री बड़े दानी हैं अपनों को लप/अंजुल (दोनों हाथ की मिला कर हथेलियां) भर भर देते हैं। इसकी चुकाने की उन्हें कोई चिंता नहीं रहती। ऋण कई वर्षों से बढ़ता ही जा रहा है। शायद उन्होंने मान लिया है, कि दूसरी सरकार चुकायेगी। और यदि भाग्यववश खुद ही चुकाना पडा तो अनेक रास्ते है। भविष्य में टैक्स बढ़ाने और लगाने के, किसने देखा है ? फिलहाल तो काम निकलना चाहिए।

प्रजा के अंधे रहने, गूंगे रहने, मूक रहने और दिमागी दिवालिएपन से किसी आम नागरिक में सामर्थ नहीं कि वह अपने कुछ साथिओं से मिल कर सुप्रीम कोर्ट या हाई कोर्ट में सुप्रीमकोर्ट सीनियर अधिवक्ता श्री अश्वनी जी की भान्ति याचिकाओं के ढेर लगा दें, कोर्ट को प्रार्थना करें कि सरकारी धन का मुफ्तखोरी में व्यय रोका जाय। ऑडिटर जनरल ऑफ़ इंडिया को गुहार लगाए कि मुफ्त का सरकारी व्यवसाय अवैधानिक घोषित हो। किसी भी ऐसे सरकारी धन के खर्च को वसूलने की जिम्मेदारी व्यक्तीश: ऑडिटर जनरल की की जाय।

प्रधान मंत्री को यह भ्रष्टाचार प्रतीत नहीं होता क्या ? जो कभी सामान्य बजट में पास नहीं किया जाता। इस प्रकार यह धंधा राजकीय खजाने पर डाका है। यह बात एक बहुत वरिष्ठ व् प्रतिष्ठित बृद्ध अधिवक्ता आपकी अदालत में जन प्रतिनिधिओं को डाकू करार दिया है। मेरा तो अब सुझाव है कि सभी प्रादेशिक और केंद्रीय बजट (रक्षा बजट को छोड़कर) विस्तृत रूप से अखबार में जनता के संवाद के लिए छपें और सभी सुझाव जिला स्तर पर एकत्रित कर केंद्र/प्रदेश मुख्य सचिव को प्रेषित किये जायँ। सर्व सम्मति होने पर ही सरकार बजट पास करे। अनुमोदित बजट से इधर-उधर कोई खर्च नहीं किया जाय।

सभी प्रकार की सब्सिडी जैसे रसोई गैस राशन, आदि पर बंद हो। सभी प्रकार के आरक्षण संविधान में बदलाव कर निरस्त किये जांय। पांच पीढियां निकल जाने के पश्चात् भी पिछड़े, गरीब व् अन्य सरीखे यदि सामान्य वर्ग के बराबर नहीं आ पाए, तो इसके लिए आम जनता चिरकाल तक उत्तरदायी नहीं ठहराई जा सकती, उसे क्यों प्रताड़ित किया जा रहा है?

सभी प्रकार की सब्सिडी जैसे रसोई गैस राशन, आदि पर बंद हो। सभी प्रकार के आरक्षण संविधान में बदलाव कर निरस्त किये जांय। पांच पीढियां निकल जाने के पश्चात् भी पिछड़े, गरीब व् अन्य सरीखे यदि सामान्य वर्ग के बराबर नहीं आ पाए, तो इसके लिए आम जनता चिरकाल तक उत्तरदायी नहीं ठहराई जा सकती, उसे क्यों प्रताड़ित किया जा रहा है?

देश की प्रतिभाओं की तो पूर्व की सभी केन्द्रीय सरकारों ने हत्या कर दी और अभी भी कर रही है। जागरूक जनता की आँख तो तब खुली जब रूस-यूक्रेन युद्ध के समय हज़ारों भारतीय विद्यार्थी उक्रेन से सरकारी हस्तक्षेप से भारत लाये जा सके। सभी प्रदेश और केंद्र के शिक्षा सचिव और बड़े अधिकारी एक बड़े प्रज्वलित अग्नि कुंड में स्वर्गँ हवन कर दें यदि उनकी रगों में लेशमात्र भी देश का खून बह रहा हो। अमृत महोत्सव और न जाने क्या क्या जनता को मूर्ख और भ्रमित करने को सफूगे मनाये जा रहे हैं लेकिन देश के बच्चों की शिक्षा की समुचित व्यवस्था नहीं बनाई जा रही? नयी शिक्षा नीति का ढिंढोरा पीट दिया लेकिन वही ढाक के तीन पात। सब कुछ वैसा ही, कोई परिवर्तन नहीं।

माँ-बाप अपने बच्चों की शिक्षा के लिए अपनी सम्पति तक बेच कर विदेश में प्रवेश दिलवाते हैं, असंख्य बिचोलिये ऐसे बच्चो की सच्चाई से सहायता भी करते हैं। मेरा सुझाव है कि अध्ययन पश्चात् ये छात्र स्वदेश नहीं लौटें कहीं अन्य देश में भविष्य उन्नत कर अपनी प्रतिभा को निखारें। कोई भारतीय मूल का व्यक्ति जब विदेश में नाम कमाता है अथवा किसी उच्च पद पर पहुँचता है तो हम भारतीय ख़ुशी से अघाते नहीं, सब श्रेय भारतवंशीय को देते हैं जबकि सच ये है कि देश में उन्हें कम सुविधाओं, आरक्षण और अप्रत्याशित ऊंची मेरिट के कारण आगे बढ़ने का अवसर नहीं मिला तो फिर अपने भाग्य और सभी पूँजी बेच कर विदेश का रुख करना पडा। ऐसे में हमें श्रेय लेने में शर्म नहीं आती ?

विषयवार किस योग्यता के कितने व्यक्ति चाहिए, इसका कोई आंकलन नहीं होता फिर नयी शिक्षा नीति का क्या आधार रहा? सरकार के पास सर्वे और सांख्यकिकी विभाग मौजूद हैं वहां क्या काम होता है? लेखक को ही नहीं मालूम? हाँ दो काम वहां देखने को मिल जायेगे– ऑफिसरों और सभी कर्मचारिओं का चाय पीने और पान खाने जाना। भोजन अवकाश आधा घंटा का प्रावधान होने पर एक घंटे से पूर्व कोई अपनी सीट पर नहीं लौटना। उस पर केवल पांच दिन कार्यदिवस और वह भी पुरे समय कभी नहीं।

मैं फिर प्रस्ताव करता हूँ कि सभी सचिवों को दो सहायक दिए जायँ, बाकी स्टाफ कार्य मुक्त कर दिए जायँ। सफेदपोशों की फौज में कतिपय ही अपने कार्य ठीक से निष्पादित करते हैं वांछित परिवर्तन यदि नहीं होता हैं तो कोई तानाशाह बन इस काम को एक दिन में करेगा। मैं पूर्व प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी की सराहना करता हूँ कि एक रात (दिन भी नहीं) में पूरा देश अनुशासन में आ गया। सरकार अपने स्तर पर इस बात का सर्वे करा ले कि जनता वैसा अनुशासन (नसबंदी जैसी अति नहीं) चाहती है क्या ?

राजस्थान सरकार ने सरकारी खर्च में अभी वृद्धि कर ली जिसका वित्तीय आंकलन शायद प्रकाशित नहीं हुआ। राज्य में 19 ज़िलों की बढ़ोतरी और एक शहर में डेवलपमेंट अथॉरिटी। क्या इनसे विभिन कैडर के व्यक्तिओं की जरुरत नहीं बढ़ेगी? क्योंकि वर्तमान के जिलों में कार्य की अधिकता तो है ही, इसलिए अन्य जिलों से डिप्लॉयमेंट संभव नहीं ? खैर मैंने दर्पण दिखा दिया है आगे जो प्रभावित होने वाले हैं वे सचेत हो जांय। क्योंकि चुनाव निकट हैं।

मुफ्त की रेवड़ी भी बटेगी, आश्वासन भी दिए जायेंगे। नकदी राशि भी मिलना संभव हो सकती है, आरक्षण की सीमा में भी फेरबदल के लिए लुहावने वादे मिलेंगे, गरीब की सीमा में भी बदलाव संभव है, यानी वह सब कुछ संभव है जिससे जनता हमेशा की तरह मूर्ख बन, भ्रमित हो जाय और मूर्ख बनाने वाले को मूर्ख वोट दे दे।

मैं समझता हूँ आप बुद्धिमान और विवेकशील हैं। थोड़ा लिखा ज्यादा समझना। आखिर में कुछ शब्द उन लोगों के लिए जो अपनी ऊपरी मंज़िल विध्यमान और सक्रीय होते हुए भी कम इस्तेमाल करते हैं : तथाकथित जी होकम - अकर्मण्य कर्मचारिओं के लिए, ; जो सुख चाहवे जीव कू तो गेल्या बनके रह ; और जब तक जीवो ऋण ले घी पीवो और सुख से जीवो। भिखारी की झोली में कभी कुछ डाले बिना लौटना नही, वैसे झोली बिना आपके डाले भरेगी अवश्य।

–अतिथि सम्पादक,
प्रो.डॉ. वीर बहादुर सिंह,
(पूर्व कुलपति एवं डेयरीविज्ञ महाराणा प्रताप कृषि एवं खाद्य प्रौद्योगिकी वि.वि., उदयपुर-राज.)

शांति स्वरूप वीतराग परिणति उत्तम सत्य धर्म है, सत्य का विकल्प नहीं

भागचंद जैन मित्रपुरा

उत्तम सत्य धर्म से तात्पर्य मात्र सत्य वचन बोलना ही नहीं है। सत्य धर्म और सत्य वचन दोनो भिन्न भिन्न हैं। झूठ नही बोलना, जैसा देखा, सुना, जाना वैसा बोलने को सत्य कहा जाता है। आत्मा भी एक द्रव है, अत: वह सत् स्वभावी है। सत्य स्वभावी आत्मा में जो शांति स्वरूप वीतरागता उत्पन्न होती है, उसे सत्य धर्म कहते है। अपने अन्तर में विद्यमान ज्ञानानन्द स्वभाव से उत्पन्न हुआ ज्ञान, क्षमादान एवं वीतराग परिणति ही उत्तम सत्य धर्म है और वही मोक्ष का कारण है।

जैसा कि हमारे गुरुओ ने कहा है कि–"**सद्रभ्यों हिंत सत्यम**"

कहने का तात्पर्य यह है कि जो सज्जनों को हितकर है वही सत्य है।

जीवन में सभी के लिए सत्य का अत्यधिक महत्व है। प्रत्येक धर्म मे किसी न किसी रूप मे सत्य की प्रतिष्ठा की गई है। जैन धर्म में इसे पंच महाव्रत और पंचाणुव्रत में स्थान दिया गया है। असत्य भाषण पाप है, क्योंकि असत्य भाषण का मूल कषाय है और जहाँ कषाय है वहा हिंसा होती ही है। अतएव असत्य भाषण से भी अवश्य हिंसा होती है। अहिंसा के बाद सत्य का क्रम आता है।

सत्य क्यों बोलना चाहिये –

1) क्योंकि झूठ बोलना बुरे काम मे बढ़ोतरी करना है।

2) सत्त जो स्त शब्द से आया है, जिसका मतलब है वास्तविक होना। वस्तुस्थिति, तथ्य से अवगत होना।

उत्तम सत्य धर्म हमे यही सिखाता है कि आत्मा की प्रकृति जानने के लिए सत्य आवश्यक है और इसके आधार पर ही परम आनंद मोक्ष को प्राप्त करना संभव है। अपने मन को, आत्मा को सरल और शुद्ध बना ले तो सत्य अपने आप ही आ जायेगा।

सत्य बोलना अर्थात् सही का चुनाव करना जैसे उचित व अनुचित मे से उचित का चुनाव करना शाश्वत व क्षण भंगुर मे से शाश्वत को चुनना।

कहा जाता हैं कि जो सत्यवादी होता है, उसका आत्मबल मजबूत होता है। उसकी आत्मा में विश्वास रूपी हजारों हाथियों का बल होता है। सत्य कभी परास्त नहीं होता है। सत्य दुर्लभ नहीं होता है, अपंग नही होता है एवं विपरीत परिस्थितियों में भी एक समय आता है जब सत्य विजय की प्राप्ति अवश्य करता है।

सत्य बोलना बड़ा कठिन माना जाता है, जबकि यह बहुत ही सरल होता है। सत्य का मार्ग तलवार की धार के समान हो सकता है, लेकिन जीत अन्तत: सत्य की ही होती है।

वाल्मीकि रामायण में लिखा है, सत्यम्वेश्वरो लोके सत्ये धर्म: सदाश्रित:। लोक में सत्य ही ईश्वर है। धर्म सदा सत्य में ही रहता है। इसका अर्थ है कि विजय हमेशा सत्य की होती है। वेद, शास्त्र एवं पुराणों में कहा गया है कि सत्य के समान दूसरा धर्म नहीं है। सत्य को याद नहीं रखना पड़ता है।

झूठ में आकर्षण हो सकता है, पर स्थिरता तो सत्य में है। सत्य वचन सुनने और बोलने से बढ़कर आनंदप्रद और कुछ भी नहीं है। महात्मा गांधी ने कहा है कि सत्य से भिन्न कोई परमेश्वर नहीं है। अपनी आत्मकथा का नाम ही उन्होंने सत्य के प्रयोग रखा। मनुष्य लोभ के वशीभूत होकर झूठ बोलता है। बालक अपने शैशवकाल में सत्य ही बोलता है, पर हम अपने स्वार्थवश उसे असत्य की राह पकड़ा देते हैं।

एक रिसर्च में सामने आया है कि असत्य वचन के कारण दीर्घकालीन बीमारियां - ब्लड प्रेशर, डायबिटीज, कोलेस्ट्रॉल, याददाश्त कमजोर होना, जल्दी घबराहट होना आदि बहुत सारी बीमारियां घर कर लेती है। धर्म का मूल गुण है, इसके पालन करने वालों को मानसिक एवं शारीरिक शक्ति प्रदान करना एवं बीमारियों से दूर रखना। अत: हम समझ सकते है कि जीवन के हर पड़ाव पर सत्य का पालना करना आवश्यक है।

दूसरी ओर इसके पालन करने से, उसे उत्तरदायित्व निभाने वाला माना जाता है, जिससे विश्वसनीयता बढ़ती है और अंततोगत्वा उसे सम्मानित नजरो से देखा जाता है। कवि द्यानतराय जी ने पूजा में लिखा है –

उत्तम-सत्य-वरत पालीजै,
पर-विश्वासघात नहिं कीजे।
सांचे- झूठे मानुष देखो,
आपन-पूत स्वपास न पेखो।।
उत्तम सत्य व्रत का पालन करे,
विश्वासघात न करें। सच्चे - झूठे इंसानों को देखो, खुद को-संतान को ध्यान में ना रखो।

कविवर आगे लिखते है –

उत्तम सत्य वचन मुख बोले,
सो प्राणी संसार न डोले।

Speak the perfect truth, so that the movement of living beings may end. Salvation is attained

उत्तम सत्य धर्म अपनाने मात्र से जीवों का संसार से आवागमन समाप्त हो जाता है। मोक्ष प्राप्त हो जाता है।

संकलन--भागचंद जैन,
अध्यक्ष, अखिल भारतीय जैन बैंकर्स फोरम, जयपुर।

प्रशासन की मिलीभगत से हो रहे अवैध बजरी खनन के खिलाफ प्रदर्शन

भीलवाड़ा, (निसं)। प्रदेश में हो रहे अवैध बजरी दोहन व परिवहन रोकने को लेकर नागरिक अधिकार मोर्चा के कार्यकर्ताओं ने जिला कलेक्ट्रेट कार्यालय पर प्रदर्शन किया और जिला कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा।

जानकारी के अनुसार जिले में बजरी का ठेका नहीं होने के बावजूद भी खनिज विभाग पूर्व के ठेकेदारों की मदद से अवैध खनन भारी मात्रा में करवा रहे हैं। खनिज विभाग द्वारा बजरी एवं खनन माफिया से मिलकर हमेशा करोड़ों रुपए के राजस्व का नुकसान किया जा रहा है। खनिज विभाग में प्रशासन की मिलीभगत से अवैध बजरी दोहन परिवहन से राजस्व को नुकसान के साथ-साथ पर्यावरण को भारी नुकसान हो रहा है यह सब संबंधित विभाग की मिलीभगत से हो रहा है। नदियों की वास्तविक स्थिति को बिना ठेके के खनन करना कानूनी अपराध है परंतु खनिज विभाग के अनदेखी से फर्जी टोकन सिस्टम के कारण माफिया करोडों की वसूली परिवहन करने वाले उपभोक्ताओं व वाहन वालों से कर रहे हैं। खनिज विभाग के रसीद के बिना हजारों ट्रैक्टर, डंपर व ट्रोले में बजरी कर अवैध खनन कर परिवहन कर रहे हैं परंतु प्रशासन विभाग आंखें बंद करके देख रहा है। अवैध खनन परिवहन से हाल ही में दो छात्रों के दर्दनाक मृत्यु हो गई परंतु इस पर प्रशासन ध्यान नहीं दे रहा है।

नागरिक अधिकार मोर्चा के कार्यकर्ताओं ने जिला कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा।

इस मांग को लेकर जिला कलेक्ट्रेट कार्यालय पर नागरिक अधिकार मोर्चा के संयोजक महेंद्र श्रोत्रिय के नेतृत्व में उपाध्यक्ष विश्वनाथ गर्ग, शिवकुमार शर्मा, प्रेम सिंह, माधु रैगर, भैरूलाल जाट, विकास यादव, मनोज श्रोत्रिय, राजु शर्मा, सुधाकर शर्मा, योगेश विजयवर्गीय, पंकज दाधिच, राजेश शर्मा, शुभम नराणिया, गोपाल शर्मा, वंदना राजपूत, सुमन कुमारी, जीत नराणिया सहित सभी ने जिला कलेक्ट्रेट कार्यालय पर इकट्ठे होकर प्रदर्शन किया और जिला कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा। खनिज विभाग व प्रशासन को नींद से जगाने के लिए शनिवार को सद्बुद्धि यज्ञ किया जाएगा। खनिज विभाग के अधिकारी व कर्मचारी इस पारदर्शी सरकार को बदनाम व राजस्व नुकसान करने में लगे हुए इसके लिए आगामी दिनों में रणनीति तैयार कर भीलवाड़ा से जयपुर तक पैदल मार्च किया जाएगा।

मनचलों से परेशान छात्रा ने कलेक्टर से न्याय की गुहार लगाई

- **जिला कलेक्टर के निर्देश पर एक्शन में आई अलीगढ़ पुलिस, मामला दर्ज किया**
- **छात्रा 13 सितंबर को अलीगढ़ थाने पर पहुंची तो पुलिस ने परिवाद लेकर भेज दिया था**

चौरु/उनियारा, (निसं)। प्रदेश की सरकार छात्राओं के बेहतर शिक्षा एवं सुरक्षा के लंबे-लंबे दावे करती है। लेकिन हकीकत में इन दावों की पालना करवाने वालों की लापरवाही दावों पर उलटी पड़ती है। ऐसा ही एक मामला अलीगढ़ थाना पुलिस की कार्यशैली का देखने का मिला। थाना इलाके में रहने वाली एक छात्रा मनचलों से परेशान होकर 13 सितंबर को अलीगढ़ थाने पर पहुंची तो पुलिस ने परिवाद लेकर वापस भेज दिया, लेकिन मनचलों पर किसी प्रकार की काई कार्रवाई नहीं की गई।

परेशान छात्रा ने सात दिन तक किसी प्रकार की कोई कार्रवाई नहीं होने पर जिला कलेक्टर चिन्मयी गोपाल के पास पहुंचकर न्याय की गुहार लगाई। अलीगढ़ की बेटी ने कलेक्टर से गुहार लगाई की मनचले लड़के उसको स्कूल जाते-आते समय परेशान करते हैं एवं अश्लील हरकतें करते हैं। कलेक्टर को बताया कि रात्रि एवं दिन के समय गली में एवं घर के आसपास बाइक दौड़ाते हैं। जिससे हर समय मेरे साथ अनहोनी होने का अंदेशा सताता रहता है। पीड़ित बेटी की बात सुनकर कलेक्टर ने शीघ्र पुलिस के आलाधिकारियों को निर्देश दिए, जिसके बाद अलीगढ़ थाना पुलिस ने साहिन पुत्र सरदार मंसूरी, शोयब पुत्र शब्बीर आलम, दानिश पुत्र सरदार मंसूरी के खिलाफ विभिन्न धाराओं में मामला दर्ज कर जांच थानाधिकारी हेमराज मीणा को सौंप दी। पीड़ित छात्रा ने जिला कलेक्टर एवं दर्ज मामले में पुलिस पर आरोप लगाया कि जब वह थाने जाकर मनचलों पर कार्रवाई करने की मांग की तो पुलिस ने छात्रा से सबूत मांगे।

हेमराज मीणा, थानाधिकारी, अलीगढ़ का कहना है कि छात्रा की शिकायत पर मनचलों के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच की जा रही है। शीघ्र ही कानूनी कार्रवाई की जाएगी। विद्यालयों के आसपास विचरण करने वाले मनचलों पर टीमें बनाकर कार्रवाई की जाएगी।

सादुलपुर में खाद्य सामग्री के आठ नमूने लिये गये

सादुलपुर, (निसं)। जिले में खाद्य पदार्थों के नमूनों के लिये चलाये जा रहे विशेष अभियान के तहत शुक्रवार को खाद्य सुरक्षा टीम ने सादुलपुर में 8 नमूने लिये। सीएमएचओ डॉ. मनोज शर्मा ने बताया कि जिला कलेक्टर सिद्धार्थ सिहाग के निर्देशानुसार टीम ने शहर में मेसर्स जैन जलपान गृह से रसगुल्ला का नमूना, मैसर्स जैन किराना स्टोर से घी का नमूना, मेसर्स बीकानेर मिष्ठान भंडार से रसगुल्ला, मैसर्स प्रवीण किराना स्टोर से घी, मैसर्स कानजी सैनी मिष्ठान भंडार से रसगुल्ला व कलाकंद, मैसर्स सती सेवन मसाला उद्योग से मिर्च व धनिया का नमूना लेकर जांच के लिये प्रयोगशाला भिजवाया गया है तथा जांच आने के बाद दोषी पाए जाने पर नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी।

इसके अलावा खाद्य लाईसेंस और रजिस्ट्रेशन के लिए विशेष शिविर शुक्रवार को राजगढ़ में तथा गुरुवार को सांखू में लगाया गया।

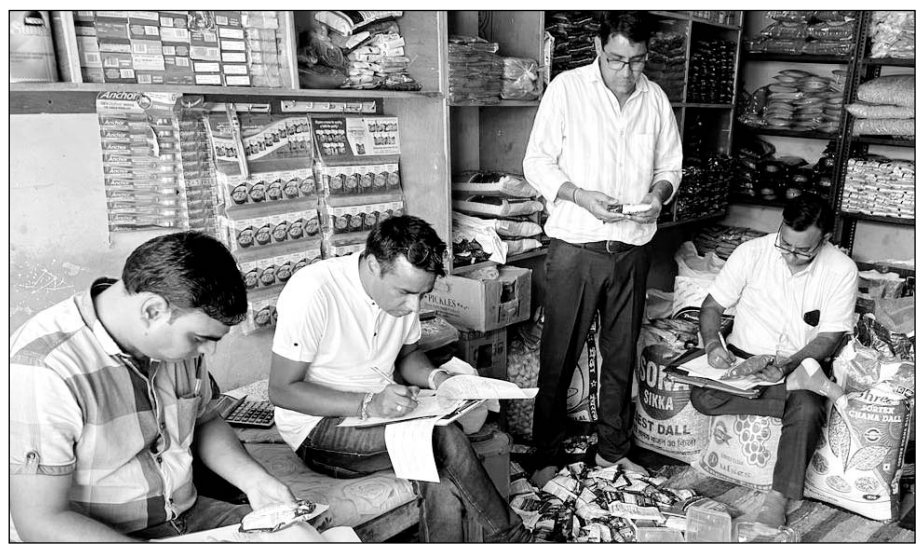

जिले में खाद्य पदार्थों के नमूनों के लिये चलाये जा रहे विशेष अभियान के तहत सादुलपुर में खाद्य सामग्री के खाद्य सुरक्षा टीम ने नमूने लिये।

- **सादुलपुर और सांखू में खाद्य लाइसेंस जारी किए**

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. मनोज शर्मा ने बताया कि राज्य के खाद्य सुरक्षा आयुक्त की ओर से जारी दिशा-निर्देशानुसार राजगढ़ के आसपास क्षेत्र के जुडे खाद्य कारोबारियों के लाईसेंस एवं रजिस्ट्रेशन के विशेष शिविर में 39 तथा गुरुवार को सांखु में 40 व्यापारियों ने आवेदन किया। सभी को रजिस्ट्रेशन कर खाद्य लाइसेंस जारी किया गया। सीएमएचओ ने बताया कि सभी खाद्य पदार्थ व्यापारी व सब्जी व्यापारियों और किराना व्यापारियों के शिविर में नए लाइसेंस बनवाएं।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

शनिवार 23 सितम्बर, 2023

भाद्रपद मास, शुक्ल पक्ष, अष्टमी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2080, ज्येष्ठा नक्षत्र दिन 3:34 तक, आयुष योग रात्रि 11:42 तक, वणिज करण दिन 1:36 तक, चन्द्रमा आज दिन 3:54 से धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-कन्या, बुध-सिंह, गुरू-मेष, शुक्र-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज भद्रा दिन 1:36 से रात्रि 12:57 तक है। आज मुक्ता भरण सप्तमी, सन्तान दुबड़ी सप्तमी, ललिता सप्तमी है। आज से महालक्ष्मी व्रत आरम्भ होंगे।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर सूर्योदय से 7:49 तक, लाभ-अमृत 7:49 से 10:49 तक, शुभ 12:20 से 1:50 तक, चर 4:50 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 10:30 से 12:00 तक। सूर्योदय 6:14, सूर्यास्त 6:21

मेष

पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा।

वृष

आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बना रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त हो सकता है। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी।

मिथुन

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

कर्क

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिव समस्या का समाधान हो सकता है।

सिंह

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

कन्या

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला

विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक

व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा।

धनु

घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

मकर

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

कुंभ

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे।

मीन

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता से मनोबल बढ़ेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

हिण्डौन सिटी

Rashtradoot

फोनः- 230200, 230400 फैक्सः- 07469-230600 वर्षः 15 संख्याः 324 प्रभात हिण्डौन सिटी, शनिवार 23 सितम्बर, 2023 पो. रजि.SWM-RJ-6069/2017-18 पृष्ठ 8 मूल्य 2.50 रु.

लोकसभा में बिधूड़ी का भड़काऊ भाषण, ''डैमेज कंट्रोल'' में जुटी भाजपा

भाजपा अध्यक्ष जे.पी. नड्डा ने बिधूड़ी को कारण बताओ नोटिस जारी किया

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 22 सितम्बर। आज भाजपा बेहद बचाव की मुद्रा में आ गई और डैमेज कंट्रोल में लग गई। उसके लोकसभा सांसद रमेश बिधूड़ी ने बसपा के सांसद दानिश अली के विरूद्ध नफरत भरी टिप्पणी की बल्कि आपत्तिजनक शब्द भी प्रयुक्त किए। लोकसभाध्यक्ष ओम बिड़ला ने उनके बयानों को गंभीरता से लिया और दक्षिण दिल्ली के सांसद को भविष्य में ऐसा करने पर कड़ी कार्रवाई की चेतावनी दी।

कथित टिप्पणियों को सदन की कार्रवाई से निकाल दिया गया और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने तुरंत बिधूड़ी के व्यवहार के लिए खेद प्रकट किया। भाजपा अध्यक्ष जे.पी. नड्डा ने रमेश बिधूड़ी को हेट स्पीज के मुद्दे पर कारण बताओ नोटिस दिया है।

बिधूड़ी के बयानों से विपक्षी नेता भड़क गए और बिधूड़ी के निलंबन की मांग करने लगे। कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने कहा कि लोकसभा में बिधूड़ी जो बयान दिया है वह सदन के सभी सदस्यों का अपमान है और उन्हें निलंबित किया जाना चाहिए।

बिधूड़ी की टिप्पणियों को गंभीरता से लेते हुए बिड़ला ने उन्हें चेतावनी दी कि अगर उन्होंने दुबारा ऐसा बर्ताव किया तो उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

- लोकसभा स्पीकर ओम बिड़ला ने बिधूड़ी की टिप्पणी को सदन की कार्यवाही से निकाला और बिधूड़ी को चेतावनी दी। रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने भी इस टिप्पणी पर खेद जताया।
- इधर विपक्ष का हमला भी तेज हो गया है, कांग्रेस के जयराम रमेश ने बिधूड़ी की टिप्पणी को संसद का अपमान बताया व उन्हें निलम्बित करने की मांग की।
- माकपा ने एक बयान जारी कर कहा कि, बिधूड़ी ने सदन में जिस तरह की गलत भाषा का प्रयोग किया है, उसके लिए उन्हें गिरफ्तार किया जाना चाहिए।
- तृणमूल कांग्रेस की सांसद महुआ मोइत्रा ने कहा, मुसलमानों व ओ.बी.सी. को गाली देना भाजपा की संस्कृति है, शिव सेना ने कहा, सत्ता पक्ष में कोई शर्म नहीं बची है।
- आम आदमी पार्टी के संजय सिंह ने कहा, यह आर.एस.एस. द्वारा सिखाए गए मूल्यों का नतीजा है। आम आदमी पार्टी ने हर्षवर्धन व रवि शंकर प्रसाद की भी आलोचना की, जो बिधूड़ी की टिप्पणी पर हंस रहे थे।

माकपा ने बिधूड़ी को गिरफ्तार करने की मांग की। उसने एक बयान में कहा, ''नफरत भरे भाषण के लिए कोई विशेषाधिकार नहीं है, बिधूड़ी को गिरफ्तार कीजिए। उनके द्वारा दानिश अली के विरूद्ध जो अभद्र भाषा बोली गई है वह नफरती भाषण का सबसे गंदा रूप है जिस पर सुप्रीम कोर्ट ऐतराज कर चुका है। उन्हें गिरफ्तार करना चाहिए।

तृणमूल कांग्रेस सांसद महुआ मोइत्रा ने कहा, ''मुसलमानों और अन्य पिछड़ा वर्गों को गाली देना भाजपा की संस्कृति का अभिन्न अंग है और उन्हें इसमें कुछ गलत नहीं लगता। नरेन्द्र मोदी ने भारतीय मुसलमानों को अपने ही देश में ऐसी डर की हालत में रहने को मजबूर कर दिया है कि वे अपने ही देश में यह सब सहन कर रहे हैं। मैं यह कहने के लिए क्षमा चाहती हूं लेकिन मां काली ने मुझे ताकत दी है।

महुआ ने मांग की कि प्रधानमंत्री मोदी और लोकसभाध्यक्ष ओम बिड़ला बिधूड़ी के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करें।

शिव सेना (उद्धव गुट) की राज्यसभा सांसद प्रियंका चतुर्वेदी ने एक्स पर कहा, ''भाजपा सांसद द्वारा बसपा के साथी सांसद कुंवर दानिश अली के विरूद्ध भद्दी भाषा का प्रयोग किया गया है। कोई शर्म नहीं बची है। यह विचलित करने वाला है क्या लोकसभाध्यक्ष इस पर ध्यान देकर कार्रवाई करेंगे।''

आम आदमी पार्टी के नेता संजय

(शेष पृष्ठ 5 पर)

संसद का विशेष सत्र समाप्त

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 22 सितम्बर। संसद का पंचदिवसीय विशेष सत्र, निर्धारित समय से एक दिन पूर्व, गुरुवार रात को अनिश्चित काल तक के लिये स्थगित कर दिया गया। इस सत्र में संसद के दोनों सदनों ने पूरे बहुमत से अति महत्वपूर्ण महिला आरक्षण विधेयक पारित कर दिया।

इस सत्र को लेकर बड़ी सनसनी जैसी स्थिति थी कि इस विशेष सत्र में क्या-क्या होगा। लोकसभा चुनाव जल्दी कराना, लोकसभा एवं राज्य

- 5 दिन का विशेष सांसद सत्र चौथे दिन गुरूवार की रात समाप्त कर दिया गया। इस सत्र में संसद के दोनों सदनों से महिला आरक्षण विधेयक पूर्ण बहुमत से पारित हो गया।

विधानसभाओं के चुनाव साथ-साथ कराना तथा चुनाव आयोग की चयन समिति से भारत के मुख्य न्यायाधीश को हटाया जाना- आदि विषयों की अटकलें लगाई जा रही थीं लेकिन संसद को पुराने भवन से नये भवन में पहुँचाने और महिला आरक्षण विधेयक पारित करने के अलावा कुछ नहीं हुआ। चन्द्रयान-3 की

(शेष पृष्ठ 5 पर)

महिला नेताओं ने महिला आरक्षण कोटा में ओ.बी.सी. कोटा की मांग उठाई

-श्रीनन्द झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 22 सितम्बर। संसद में महिला आरक्षण विधेयक पारित होने का सत्तारूढ़ भाजपा पर कम से कम अवांछनीय प्रभाव जरूर पड़ा है- इंडिया गठबंधन, खासतौर से कांग्रेस के नेताओं के इस अभियान को जरूर सक्रियता एवं ऊर्जा तथा ताकत मिल गई है कि वे जातिगत जनगणना एवं ओ.बी.सी. के लिए आरक्षण की माँग को एक अभियान का रूप दें।

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने इस मुद्दे को उठाते हुये कहा है कि महिला आरक्षण की क्रियान्विति को टालने के कारण के रूप में, परिसीमन तथा जनगणना का हवाला देने में सरकार ''धोखा एवं भुलावा देने वाली नीति'' तथा जातिगत जनगणना से ध्यान हटाने का रास्ता अपना रही है। ''महिला आरक्षण'' की तत्काल क्रियान्विति की माँग करते हुये, उन्होंने ओ.बी.सी. के लिये महिला आरक्षण कोटा के अन्दर कोटा रखे जाने की माँग जोरदार तरीके से की। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने भी नई जनगणना की कवायद तत्काल शुरु किये जाने की माँग की तथा कहा कि इस कवायद के एक हिस्से के रूप में जाति-आधारित जनगणना की कराई जाये।

ओ.बी.सी. की गणना तथा कोटा के बिना महिला आरक्षण विधेयक के पारित होने से एन.डी.ए. के अन्दर स्वर मुखरित हो रहे हैं। मध्य प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री तथा भाजपा नेता उमा भारती ने महिला आरक्षण में ओ.बी.सी. को बाहर रखे जाने को ''दुर्भाग्यपूर्ण'' बताया है तथा ओ.बी.सी. महिलाओं तथा इसके साथ ही मुस्लिम समुदाय की महिलाओं के लिये आरक्षण की माँग की है। केन्द्रीय मंत्री अनुप्रिया पटेल भी महिला आरक्षण में ओ.बी.सी. कोटा के लिये विपक्ष की माँग के समर्थन में आ गई हैं। उन्होंने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ''इस मुद्दे के समाधान के रास्तों पर विचार किया ही होगा।'' अनुप्रिया पटेल अपना दल (सोने लाल), जो भाजपा के नेतृत्व वाले एन.डी.ए. का घटक दल है, की अध्यक्ष

- भाजपा की नेता तथा मध्य प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती ने महिला आरक्षण में ओ.बी.सी. महिलाओं को शामिल नहीं करने को दुर्भाग्यपूर्ण बताया।
- एन.डी.ए. में भाजपा की सहयोगी पार्टी की नेता और केन्द्रीय मंत्री अनुप्रिया पटेल ने भी ओ.बी.सी. महिलाओं का कोटा तय करने की मांग की।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

महिला आरक्षण बिल का सच क्या है?

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 22 सितम्बर। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने संसद द्वारा महिला आरक्षण विधेयक पारित करने को महान बताया लेकिन साथ ही कहा कि सरकार द्वारा इसे जल्दबाजी में विशेष सत्र बुलाकर पारित करवाना ओ.बी.सी. कोटा से ध्यान बंटाने की चाल है और किसी को पता नहीं है कि 10 साल बाद भी महिलाओं का आरक्षण लागू होगा या नहीं।

- राहुल ने यह सवाल उठाते हुए, इसका जवाब भी दिया कि, जात आधारित जनगणना से ध्यान हटाने के लिए महिला आरक्षण का मुद्दा उठाया गया है। महिला आरक्षण विधेयक पारित होना बहुत अच्छी बात है, पर कोई नहीं जानता महिलाओं को आरक्षण कब मिलेगा।

संसद का विशेष सत्र समाप्त होने के बाद ए.आई.सी.सी. में एक

(शेष पृष्ठ 5 पर)

चार लोकसभा सीटों पर उप चुनाव नहीं

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 22 सितम्बर। चुनाव आयोग ने तय किया है कि लोकसभा की चार रिक्त सीटों अम्बाला, पुणे, चन्द्रपुर

- चुनाव आयोग ने यह निर्णय इसलिए लिया है, क्योंकि अगले आम चुनावों में एक वर्ष से भी कम का समय बचा है।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

क्या आपको कम सुनाई देता है।?
ऑटोमेटिक
कान की मशीनें
स्पीच थैरेपी
कॉकलियर इम्पलांट, ऑटिजम
डिले स्पीच, हकलाना, तुतलाना
PERFECT SPEECH AND HEARING SOLUTIONS
Tonk Road, JAIPUR | Vaishali Nagar, JAIPUR
सम्पर्क- 94602 07080

कर्नाटक में कुछ वरिष्ठ कांग्रेसी नेता तीन उपमुख्यमंत्री बनाने की मांग क्यों कर रहे हैं

अटकलें हैं कि, मु.मंत्री सिद्धारमैया के इशारे पर उनके समर्थक डी.के. शिव कुमार को तंग करने के लिए यह मांग उठा रहे हैं

-लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 22 सितम्बर। कर्नाटक में कांग्रेस के सामने ढ़ेरों समस्याएं खड़ा होना उसी समय तय हो गया था, जब मई 2023 में उसकी जबरदस्त जीत हुई थी। यह चीज अब और ज्यादा जोर-शोर से सामने आने लगी है क्योंकि वरिष्ठ नेता तीन उपमुख्यमंत्रियों की माँग करने लगे हैं। यह एक ऐसा प्रस्ताव है जो चन्द महीनों पुरानी सरकार के लिये परेशानी पैदा कर सकता है।

चूँकि कांग्रेस के पास 224 सदस्यीय विधानसभा में 134 सीटों का अपराजेय एवं ''सुरक्षित'' बहुमत है तथा भाजपा अपेक्षाकृत बहुत कम सीटों के साथ दूसरे नम्बर पर तथा जनता दल (एस) नितान्त कमजोर स्थिति में है तथा इसलिये सरकार को कोई खतरा नहीं है, लेकिन वरिष्ठ नेताओं की व्यक्तिगत आकांक्षाएं तथा उनकी असंभव किस्म की माँगें मुख्यमंत्री एस. सिद्धारमैया के लिये अतिरिक्त तनाव एवं दबाव पैदा कर सकती हैं।

तीन उपमुख्यमंत्री बनाने का प्रस्ताव सहकारिता मंत्री के.एन. राजन्ना की तरफ से आया है तथा यह प्रस्ताव सत्तारूढ़ दल में अत्यधिक चर्चा का विषय बन गया है। कुछ लोग तो इसके लिये लामबन्दी भी करने लगे हैं। इन लोगों का तर्क है कि तीन उपमुख्यमंत्रियों के होने से लोकसभा चुनावों में कांग्रेस को मदद मिल सकती है। राजन्ना को अपने इस ''सुझाव'' में कोई गलत बात नज़र नहीं आ रही।

- तीन उपमुख्यमंत्री बनाने का नवीनतम प्रस्ताव सहकारिता मंत्री के.एन. राजन्ना ने रखा है और उन्होंने कहा कि, इससे कांग्रेस को लोकसभा चुनाव में लाभ होगा।
- कुछ वरिष्ठ नेताओं की यह मांग कर्नाटक में कांग्रेस सरकार के लिए परेशानी पैदा कर सकती है।
- कर्नाटक में कांग्रेस सरकार के गठन के समय ही एक बात तय हो गई थी कि, उपमुख्यमंत्री का एक ही पद होगा और उस पर डी.के. शिवकुमार होंगे।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

खड़गे-राहुल की सभा से पहले ही राजस्थान कांग्रेस की एकजुटता हवा हुई

होर्डिंग में पायलट को स्थान नहीं, अनुशासनहीनता के नोटिस का सामना करने वाले धारीवाल को दी जगह

जयपुर, 22 सितम्बर (का.प्र.)। राहुल गांधी और कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे शनिवार को राजधानी जयपुर में कांग्रेस के नए प्रदेश मुख्यालय भवन का शिलान्यास करेंगे। शिलान्यास के बाद मानसरोवर के शिप्रा पथ पर हाउसिंग बोर्ड ग्राउण्ड पर सभा रखी गई है। लेकिन, सोचने वाला विषय यह है कि, एक तरफ तो, कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे और राहुल गांधी कांग्रेसजनों को जीत का मंत्र देने आ रहे हैं, वहीं, दूसरी तरफ कार्यक्रम से पहले ही एक बार फिर राजस्थान में कांग्रेस की खेमेबाजी उभर कर सामने आ गई है। हुआ यह है कि, कार्यक्रम के लिए प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय पर जो होर्डिंग्स लगे हैं उनमें, 25 सितंबर 2022 की घटना में दोषी माने जाने के बाद नोटिस का सामना कर रहे मंत्री शांति धारीवाल की फोटो तो लगी है, लेकिन कांग्रेस कार्यसमिति सदस्य सचिन पायलट को होर्डिंग में जगह नहीं दी गई।

कांग्रेस मुख्यालय भवन के पोस्टरों में सोनिया गांधी, राहुल गांधी, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, संगठन महासचिव के.सी. वेणुगोपाल के साथ प्रभारी सुखजिंदर सिंह रंधावा, मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा और अरबन डवलपमैंट एण्ड हाउसिंग (यू.डी.एच.) मंत्री शांति धारीवाल के

- कांग्रेस के बेहद जनप्रिय नेता सचिन पायलट की अनदेखी करने की इस कोशिश से पार्टी नेतृत्व के एकजुटता के दावे बेमानी से लगते हैं।
- राहुल गांधी और पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे कांग्रेस के नए प्रदेश मुख्यालय का शिलान्यास करने जयपुर आ रहे हैं और इस अवसर पर सभा को भी संबोधित करेंगे।
- राहुल की सभा में 60 हजार लोग जुटाने का प्रस्ताव है, सभी को टारगैट किया गया है पर दो दिन पहले ही मुख्यमंत्री के एक कार्यक्रम में जयपुर के तीन मंत्री 500 लोग भी नहीं जुटा पाए थे, ऐसे में उनकी क्षमता पर संशय है।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

मैं खिलाड़ी की काबिलियत का आकलन इस आधार पर करता हूं कि वह कितने साल खेल सका। - रिंकी पोंटिंग

पूर्व ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी, खिलाड़ियों की काबिलियत को लेकर।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

राहुल द्रविड़

भारतीय कोच राहुल द्रविड़ ने भारत-ऑस्ट्रेलिया वनडे सीरीज से पहले सूर्यकुमार यादव के चयन का बचाव किया है। कोच ने कहा कि अश्विन की कैलीवर के गेंदबाज को ट्रायल पर नहीं रखा जाता, जबकि सूर्यकुमार यादव जैसे खिलाड़ी को वर्ल्ड कप टीम में अपनी जगह की चिंता करने की जरूरत नहीं है। कोच ने अनुभवी स्पिन ऑलराउंडर रविचंद्रन अश्विन और वॉशिंगटन सुंदर को वर्ल्ड कप प्लांस का हिस्सा बताया और कहा- अश्विन-सुंदर को अक्षर पटेल के संभावित विकल्प के रूप में टीम में जगह दी गई है और अगर अक्षर जांघ की चोट से उबरने में नाकाम रहते हैं।

क्या आप जानते हैं ?... गोल्फ एकमात्र ऐसा खेल है जिसे चांद पर भी खेला गया है। 6 फरवरी, 1971 को एलन शेफर्ड नामक अंतरिक्ष यात्री ने चन्द्रमा पर गोल्फ के दो स्ट्रोक खेले।

19वें एशियाई खेलों में भारतीय खिलाड़ियों से भेदभाव पर भारत ने जताई आपत्ति

नयी दिल्ली, 22 सितंबर। भारत ने चीन द्वारा उसके कुछ खिलाड़ियों को 19वें एशियाई खेलों में प्रवेश से वंचित किए जाने पर शुक्रवार को कड़ी आपत्ति व्यक्त की और केंद्रीय खेल एवं युवा कार्य मंत्री अनुराग ठाकुर की चीन यात्रा को रद्द कर दी गई है। विदेश मंत्रालय के आधिकारिक प्रवक्ता अरिंदम बागची ने आज यहां कुछ भारतीय खिलाड़ियों को 19वें एशियाई खेलों में प्रवेश से वंचित किए जाने पर मीडिया के सवालों के जवाब में कहा भारत सरकार को पता चला है कि चीन के अधिकारियों ने निशाना बनाते हुए और पूर्व-निर्धारित तरीके से अरुणाचल प्रदेश के कुछ भारतीय खिलाड़ियों को चीन के हांगझोउ में होने वाले 19वें एशियाई खेलों में मान्यता और प्रवेश से वंचित करके उनके साथ भेदभाव किया है। श्री बागची ने कहा, हमारी लंबे समय से चली आ रही और सुसंगत स्थिति के अनुरूप, भारत, दृढ़ता से भारतीय नागरिकों के साथ उनके निवास स्थान एवं जातीयता के आधार पर भेदभावपूर्ण व्यवहार को अस्वीकार करता है। अरुणाचल प्रदेश भारत का अभिन्न और अविभाज्य अंग है और रहेगा।

चीन ने एशियाई खेल उद्घाटन समारोह के लिए ध्वजवाहकों की घोषणा की

हांगझू, 22 सितंबर। चीन ने तैराक किन हैयांग और बास्केटबॉल खिलाड़ी यांग लिवेई को शुक्रवार को 19वें एशियाई खेलों के उद्घाटन समारोह के लिए ध्वजवाहक के रूप में नामित किया गया। तैराकी विश्व चैंपियन किन के नाम तीन स्पर्धाओं में एशियाई रिकॉर्ड और 200 मीटर में एक विश्व रिकॉर्ड है। वह 23 सितंबर से आठ अक्टूबर के बीच पूर्वी चीन के झेजियांग प्रांत के हांगझउ में होने वाले एशियाई खेलों में पुरुषों की 50 मीटर, 100 मीटर और 200 मीटर ब्रेस्टस्ट्रोक और दो रिले में भाग लेंगे। महिला बास्केटबॉल कप्तान यांग लिवेई ने पिछले वर्ष विश्व कप में रजत पदक जीतने के बाद जुलाई में एशिया कप की जीत के लिए अपने साथियों का नेतृत्व किया। एशियाई खेलों के लिए चीन ने 886 एथलीटों सहित 1,329 सदस्यों के एक प्रतिनिधिमंडल की घोषणा की है। चीन के खिलाड़ी 38 खेलों की 407 स्पर्धाओं में प्रतिस्पर्धा करेंगे। उल्लेखनीय एशियाई खेलों का उद्घाटन समारोह शनिवार शाम को होगा और यह खेल आठ अक्टूबर तक चलेंगे।

पहली बार तीनों फॉर्मेट में नंबर-1 बना भारत

मोहाली में 27 साल बाद ऑस्ट्रेलिया को हराया, शमी ने लिए 5 विकेट

मोहाली, 22 सितम्बर । भारत ने वनडे सीरीज के पहले मुकाबले में ऑस्ट्रेलिया को 5 विकेट से हरा दिया है। इस जीत से भारतीय टीम वनडे रैंकिंग में नंबर-1 पोजिशन पर आ गई है। टीम पहली बार तीनों फॉर्मेट में नंबर-1 पोजिशन पर पहुंची है। भारतीय टीम ने मोहाली के आईएस बिंद्रा स्टेडियम में कंगारुओं को 27 साल बाद हराया है। इससे पहले, टीम को ऑस्ट्रेलिया पर आखिरी जीत 1996 में मिली थी। तब टीम इंडिया ने 5 रन से मुकाबला जीता था।

मोहाली में टीम इंडिया ने टॉस जीतकर फील्डिंग करने का फैसला किया। पहले खेलने उतरी ऑस्ट्रेलिया टीम 50 ओवर में 276 रन बनाकर ऑलआउट हो गई। जवाब में टीम इंडिया ने 48.4 ओवर में 5 विकेट खोकर टारगेट हासिल कर लिया। भारतीय ओपनर शुभमन गिल ने वनडे करियर की 9वीं फिफ्टी जमाई। उन्होंने महज 37 बॉल पर हाफ सेंचुरी पूरी की। गिल ने 63 बॉल पर 74 रनों की पारी खेली। उन्होंने 117.46 की स्ट्राइक रेट से रन बनाए। गिल की पारी में 6 चौके और 2 छक्के शामिल रहे। ऋतुराज गायकवाड वनडे करियर की पहली फिफ्टी बनाकर आउट हुए। गायकवाड ने 77 बॉल की पारी में 92.21 के स्ट्राइक रेट से 71 रन बनाए। उन्हें एडम जम्पा ने किया। सूर्यकुमार यादव ने वनडे करियर की तीसरी फिफ्टी जमाई।

उन्होंने 49 बॉल पर 50 रन बनाए। उन्होंने 102.04 के स्ट्राइक रेट से रन बनाए। सूर्या की पारी में 5 चौके और एक छक्का शामिल रहा। रेग्युलर कैप्टन रोहित शर्मा की जगह कप्तानी कर रहे केएल राहुल ने वनडे करियर की 14वीं फिफ्टी जमाई। उन्होंने चौका जमाकर अर्धशतक पूरा किया। इतना ही नहीं, राहुल ने सिक्स जमाकर टीम को जीत दिलाई। राहुल ने 63 बॉल पर 68 रनों की पारी खेली। उन्होनें 92.06 के स्ट्राइक रेट से रन बनाए। राहुल की पारी में 4 चौके और एक सिक्स शामिल रहा। भारतीय ओपनर्स ने शतकीय साझेदारीकर अपनी टीम को जबर्दस्त शुरुआत दी। गिल-गायकवाड की जोड़ी ने 130 बॉल पर 142 रन की ओपनिंग साझेदारी की। इस साझेदारी को एडम जम्पा ने तोड़ा।

वनडे के वर्ल्ड चैम्पियन को मिलेंगे 33 करोड़

फाइनल हारने वाली टीम को मिलेगा 16 करोड़ का इनाम

दुबई, 22 सितम्बर। इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल ने भारत में 5 अक्टूबर से शुरू हो रहे वनडे क्रिकेट वर्ल्ड कप की प्राइज मनी का शुक्रवार को ऐलान कर दिया है। इस बार के वर्ल्ड चैंपियन को करीब 33 करोड़ रुपए (4 मिलियन डॉलर) की इनामी राशि मिलेगी, जबकि उपविजेता को करीब 17 करोड़ रुपए (2 मिलियन डॉलर) से मिलेंगे। इस बार करीब 83 करोड़ रुपए (10 मिलियन अमेरिकी डॉलर) की प्राइज मनी बांटने जा रहा है। काउंसिल ने अलग-अलग राउंड के लिए अलग-अलग प्राइज मनी तय की है। विनर और रनर अप के अलावा, वर्ल्ड कप का सेमीफाइनल हारने वाली टीम को करीब 6 करोड़ रुपए और ग्रुप स्टेज से बाहर होने वाली टीम को करीब 82 लाख रुपए मिलेंगे। इस बार जारी प्राइज मनी पिछले सीजन के बराबर ही है। काउंसिल ने पिछली प्राइज मनी करीब 83 करोड़ रुपए में कोई बदलाव नहीं किया है। पिछले सीजन की चैंपियन इंग्लैंड को भी करीब 33 करोड़ रुपए मिले थे। वनडे वर्ल्ड कप में भारत का पहला मुकाबला 8 अक्टूबर को चेन्नई में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ होगा। टूर्नामेंट का फाइनल 19 नवंबर को अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में खेला जाएगा।

पंघाल को कांस्य पदक के साथ मिला 2024 ओलंपिक का कोटा

बेलग्रेड, 22 सितंबर। भारतीय महिला पहलवान अंतिम पंघाल ने विश्व कुश्ती चैंपियनशिप 2023 में महिलाओं की 53 किग्रा स्पर्धा में स्वीडन की दो बार की यूरोपीय चैंपियन एम्मा जोना डेनिस मालमग्रेन को हराकर कांस्य पदक जीता। सर्बिया के बेलग्रेड में गुरूवार को खेले गये इस मुकाबले में अंतिम पंघाल ने कांस्य पद जीतने के साथ पेरिस 2024 ओलंपिक कोटा हासिल किया है। ग्रीष्मकालीन खेलों के आगामी संस्करण के लिए कुश्ती में यह देश का पहला कोटा है।

ओलिंपिक डॉट कॉम की रिपोर्ट के अनुसार, दो बार की अंडर-20 विश्वचैंपियन अंतिम पंघाल ने जोना मालमग्रेन पर दबाव बनाते हुए तकनीकी श्रेष्ठता के आधार पर कांस्य पदक मुकाबले को 16-6 से जीत लिया। इससे पहले, अंतिम पंघाल ने शुरुआती दौर में 2022 विश्वचैंपियन अमेरिका की डोमिनिक ओलिविया पैरिश को 3-2 से हराया था। भारतीय पहलवान ने क्वार्टरफाइनल में रूस की नतालिया मालिशेवा के ख़िलाफ़ 9-6 से जीत

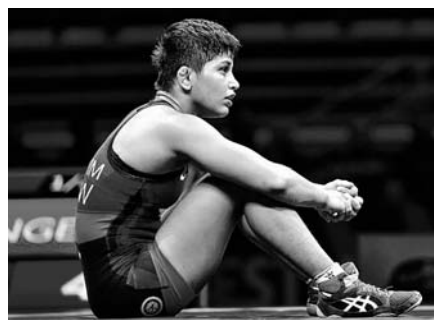

हासिल करने से पहले राउंड ऑफ 16 में पोलैंड की रोक्साना मार्ता ज़सीना पर तकनीकी श्रेष्ठता के आधार पर जीत हासिल की थी। हालांकि, विश्व कुश्ती चैंपियनशिप 2023 में महिलाओं के 53 किग्रा फ्रीस्टाइल सेमीफाइनल में बेलारूस की वेनेसा कलादज़िंस्काया से अंतिम पंघाल को 5-4 के अंतर से हार का सामना करना पड़ा।

इस बीच, 2019 एशियाई चैंपियनशिप के रजत पदक विजेता गुरप्रीत सिंह (77 किग्रा) और अजय (55 किग्रा) को गुरुवार को बेलग्रेड में ग्रीको-रोमन कुश्ती के अपने राउंड ऑफ 32 के मुकाबलों में हार मिली। अंडर-23 विश्व चैंपियनशिप में पहले भारतीय ग्रीको-रोमन पदक विजेता साजन (82 किग्रा) और मेहर सिंह (130 किग्रा) क्वालिफिकेशन राउंड से आगे नहीं बढ़ सके। इससे पहले बेलग्रेड में प्रतिस्पर्धा करने वाले 10 भारतीय पुरुष फ्रीस्टाइल पहलवान पदक जीतने में असफल रहे और कोई भी पुरुष पहलवान ओलंपिक कोटा हासिल नहीं कर सका।

भारत के पुरुष 70 किग्रा फ्रीस्टाइल पहलवान अभिमन्यु को अर्मेनिया के अरमान एंड्रियासियन से कांस्य पदक मैच में हार का सामना करना पड़ा जिसके बाद वह पदक से चूक गए। यह एक गैर-ओलंपिक कोटा इवेंट था। इस बीच, मनीषा (62 किग्रा), प्रियंका (68 किग्रा) और ज्योति बेरवाल (72 किग्रा) अपने-अपने महिला फ्रीस्टाइल वर्ग में पदक मुक़ाबलों में जगह बनाने में असफल रहीं।

मोदी रखेंगे काशी में क्रिकेट स्टेडियम की आधारशिला

वाराणसी 21 सितम्बर। देश की सांस्कृतिक राजधानी के तौर पर विख्यात वाराणसी में 451 करोड़ रूपये की लागत से अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम का निर्माण किया जायेगा। स्टेडियम का शिलान्यास प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 23 सितंबर को करेंगे जिसमें सचिन तेंदुकलर और सुनील गावस्कर जैसे तमाम दिग्गजों के भाग लेने की संभावना है। अधिकृत सूत्रों ने गुरुवार को बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने संसदीय क्षेत्र वाराणसी में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम की सौगात देने 23 सितम्बर को काशी आ रहे है। करीब 451 करोड़ के लागत से अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम बनने से मैच देखने के साथ ही, इंटरनेशनल क्रिकेटर का आधारभूत इंफ्रास्ट्रक्चर भी तैयार होगा। स्टेडियम के शिलान्यास में क्रिकेट जगत के दिग्गज खिलाड़ी सचिन तेंदुलकर व सुनील गावस्कर के आने की संभावना है। इस परियोजना में योगी सरकार ने जमीन अधिग्रहण पर 121 करोड़ रुपये खर्च किए हैं जबकि बीसीसीआई 330 करोड़ रुपये खर्च करके स्टेडियम का निर्माण कराएगा।

उत्तर प्रदेश सरकार ने यह ज़मीन उत्तर प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन (यूपीसीए) को लम्बे समय के लिए पट्टे पर दी है। 30 हज़ार दर्शकों की क्षमता वाले स्टेडियम में सात पिच (प्रैक्टिस व मेन विकेट) तथा इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम के नियमनुसार अत्याधुनिक स्टेडियम निर्माण होगा। स्टेडियम के दिसंबर 2025 तक बनकर तैयार होना संभावित है। शिलान्यास समारोह में सचिन तेंदुलकर, सुनील गावस्कर, रवि शास्त्री, दिलीप वेंगसरकर जैसे कई दिग्गज क्रिकेटरों के मौजूद रहने की संभावना है। इस कार्यक्रम में बीसीसीआई अध्यक्ष रोजर बिन्नी, उपाध्यक्ष राजीव शुक्ल, सचिव जय शाह भी मौजूद रहेंगे। उन्होने बताया कि वाराणसी के राजातालाब इलाके के गंजारी गांव में रिंग रोड के पास यह स्टेडियम लगभग 30 महीनों में बनकर तैयार हो जाएगा। रुद्राक्ष इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर के बाद अब वाराणसी में बनने जा रहे नए अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम में भी भगवान शिव और काशी की झलक देखने को मिलेगी।

राजस्थान

पत्नी की हत्या कर पति ने ट्रेन के आगे छलांग लगाई, दोनों की मौत

घरेलु बात को लेकर पति-पत्नी में आपस में झगड़ा हो गया था

रतनगढ़, (निसं)। तहसील के गांव पायली में शुक्रवार सुबह घरेलु बात को लेकर पति पत्नी में झगड़ा हो गया। बात इतनी बढ़ गई कि पति ने गुस्से में आकर पत्नी पर कुल्हाड़ी से ताबड़तोड़ वार कर दिए। घटना के बाद पति ने गांव के पास बने रतनगढ़-बीकानेर रेलवे ट्रैक पर ट्रेन के आगे कूद कर आत्महत्या कर ली। वहीं घायल पत्नी विमला की बीकानेर के पीबीएम अस्पताल में इलाज के दौरान मौत हो गई। घटना के बाद गांव में सनसनी फैल गई। घटना की सूचना मिलने पर राजलदेसर थाना पुलिस मौके पर पहुंची और परिजनों से घटना की जानकारी ली।

राजलदेसर थानाधिकारी रतनलाल ने बताया कि पायली निवासी छगनलाल मेघवाल (30) गुरूवार रात घर आकर खाना खाकर सो गया था। शुक्रवार सुबह किसी बात को लेकर उसका अपनी पत्नी विमला (25) से किसी बात को लेकर झगड़ा हो गया। दोनों में बात इतनी बढ़ गई कि छगनलाल ने कुल्हाड़ी से विमला पर हमला कर दिया। उसने करीब आधा दर्जन वार कर विमला को लहूलुहान कर दिया। घटना के बाद छगनलाल घर से भाग गया। कुल्हाड़ी के हमले से घायल विमला के चीखने पर उसकी सास दौड़कर आई। कमरे में बिखरा खून और लहूलुहान हालत में बहू को देखकर सास ने अपने अन्य दो बेटों और पड़ोसियों को मदद के लिए बुलाया। गंभीर हालत में विमला को टेम्पो से रतनगढ़ जिला अस्पताल पहुंचाया। इसी दौरान छगनलाल ने गांव में बने रतनगढ़-बीकानेर ट्रेक पर जाकर ट्रेन के आगे कूदकर सुसाइड कर लिया। वहीं डॉक्टरों ने विमला को प्राथमिक इलाज के बीकानेर रैफर कर दिया। जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई।

- **पति ने गुस्से में आकर पत्नी पर कुल्हाड़ी से ताबड़तोड़ वार किये थे**

थानाधिकारी ने बताया कि शुक्रवार सुबह सूचना मिली कि पायली निवासी 30 वर्षीय छगनलाल ने ट्रेन के सामने कूदकर सुसाइड कर ली। सूचना के बाद मौके पर पहुंच कर रेलवे ट्रैक से शव को उठाकर रतनगढ़ जिला अस्पताल की मोर्चरी में रखवाया है। जहां रिपोर्ट दर्ज होने के बाद उसके शव का पोस्टमॉर्टम करवाया जाएगा। घटना के बाद परिवार के लोगों ने पुलिस को बताया कि छगनलाल की शादी करीब डेढ़ साल पहले रतनगढ़ तहसील के गांव हरदेसर की विमला के साथ हुई थी। दोनों सामान्य रूप से जीवन जी रहे थे। मगर अचानक ऐसा क्या हुआ कि उसने विमला पर कुल्हाड़ी से हमला कर दिया और खुद सुसाइड कर लिया। इसके बारे में किसी को कुछ पता नहीं है।

दो बाइक टकराई, पिता-पुत्री की मौत

भीलवाड़ा, (निसं)। शहर के पुर थाना इलाके में बीती देर रात नेशनल हाइवे 48 पर दो बाइक की आमने-सामने भिड़ंत में पिता-पुत्री की मौत हो गई, जबकि बहन-भाई घायल हो गये। घायल युवक को एमजी अस्पताल, जबकि उसकी बहन को निजी अस्पताल में भर्ती करवाया गया है।

पुलिस के अनुसार धूलखेड़ा निवासी नंदलाल (40) पुत्र कासू माली बीती रात अपनी विवाहिता पुत्री गाडरी खेड़ा, मेजा निवासी कैलाशी (22) पत्नी श्यामलाल माली के साथ भादवी छठ के मौके पर पांसल स्थित पालना देवनारायण मंदिर पर आयोजित मेले में शामिल होने बाइक से जा रहे थे। मंदिर और धूलखेड़ा के बीच, इनकी बाइक को सामने से आई एक अन्य बाइक ने टक्कर मार दी।

- **हादसे में बहन-भाई घायल, अस्पताल में भर्ती करवाया**
- **पालना देवनारायण मंदिर पर मेले में शामिल होने जा रहे थे**

हादसे में नंदलाल, कैलाशी के साथ ही दुसरी बाइक पर सवार खटीक मोहल्ला, पांसल निवासी भंवरलाल (23) पुत्र देबीलाल माली व उसकी बहन राधा घायल हो गई। इन चारों को एमजी अस्पताल ले जाया गया, जहां नंदलाल की हालत गंभीर होने से उसे उदयपुर के महाराणा भूपाल चिकित्सालय के लिए, जबकि राधा माली को शहर के ही निजी अस्पताल के लिए रैफर कर दिया गया।

जबकि कैलाशी व भंवर लाल को एमजी अस्पताल में भर्ती कर उपचार शुरु किया गया। पुलिस ने बताया कि नंद लाल ने उदयपुर, जबकि उसकी बेटी कैलाशी ने यहां एमजी अस्पताल में दम तोड़ दिया। पुलिस ने दोनों मृतक का पोस्टमॉर्टम करा शव परिजनों के सुपुर्द कर हादसे के कारणों की जांच शुरू की है।

नकदी व चैक से रिश्वत लेते मेड़ता ग्राम पंचायत सरपंच गिरफ्तार

पीड़ित से 50 हजार रूपये नकद व 2.65 लाख का चैक लिया

उदयपुर, (कासं)। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो उदयपुर इकाई ने मेड़ता ग्राम पंचायत के सपरंच खेमसिंह देवडा को पीड़ित से 50 हजार रूपये नकदी व 2 लाख 65 हजार का चैक रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार किया।

भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो के महा निदेशक हेमन्त प्रियदर्शी ने बताया कि एसीबी की उदयपुर इकाई को परिवादी द्वारा शिकायत दी गई कि उसके विरूद्ध उसके द्वारा संचालित स्कूलों को आबादी भूमि पर अतिक्रमण करके स्कूल बनाने की शिकायत सम्पर्क पोर्टल पर की गई थी। जिसकी जांच में उसके पक्ष में कार्यवाही कर उक्त आबादी भूमि के अतिक्रमण को नियमित करने की एवज में खेमसिंह देवड़ा सरपंच ग्राम पंचायत मेडता तहसील मावली द्वारा 4लाख रूपये रिश्वत राशी की मांग कर परेशान किया जा रहा है। आग्रह करने पर आरोपी 3 लाख 50 हजार रूपये लेने पर सहमत हुआ। जिस पर एसीबी उदयपुर के उप महानिरीक्षक पुलिस राजेन्द्र प्रसाद गोयल के निर्देशन में एसीबी की उदयपुर इकाई के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक विक्रमसिंह के नेतृत्व में शिकायत का सत्यापन किया गया।

इस दौरान निरीक्षक डॉ. सोनू शेखावत मय टीम द्वारा ट्रेप कार्यवाही करते हुए खेमसिंह देवड़ा पुत्र शंभुसिंह देवड़ा निवासी ग्राम पंचायत मेडता तहसील मावली जिला उदयपुर को परिवादी से 3 लाख 50 हजार रूपये जिसमें 50 हजार नकद व 2 लाख 65 हजार रूपये का स्वयं के नाम का चैक लेते रंगे हाथों गिरफ्तार किया।

उल्लेखनीय है कि आरोपी सरपंच द्वारा परिवादी को रिश्वत राशि और चैक के साथ बैंक शाखा में ही बुलावाया, जहां आरोपी द्वारा रिश्वत राशि एवं चैक प्राप्त कर भुगतान कराने की कोशिश की, जिसे एसीबी की टीम ने दबोच लिया। शिकायत सत्यापन के दौरान आरोपी सरपंच द्वारा 25 हजार रूपये रिश्वत पूर्व में ग्रहण करना स्वीकार किया। ब्यूरो की टीम आरोपी के निवास व अन्य स्थानों पर तलाशी करने में जुटी है।

कुकर्म के आरोपी को कठोर कारावास

बौंली, (निसं)। सवाई माधोपुर परिवार व पोक्सो न्यायालय ने एक सात वर्षीय नाबालिग के साथ कुकर्म करने के आरोपी हंसराज गुर्जर को दोष सिद्ध हो जाने पर सात वर्ष का कठोर कारावास व 26 हजार रुपए के अर्थदंड से दंडित किया है।

पीड़ित व राज्य सरकार की ओर से पैरवी करते हुए विशिष्ट लोक अभियोजक अनिल कुमार जैन ने न्यायालय को अवगत कराया कि जिले के एक थाने में एक पिता ने मामला दर्ज कराया था। पुलिस ने मामला दर्ज कर अनुसंधान के बाद आरोपी को 24 जून 2022 को ही गिरफ्तार कर न्यायालय में चालान पेश किया तब से ही आरोपी न्यायिक अभिरक्षा में चल रहा है।

गैंगस्टर रोहित गोदारा का खास गुर्गा दानाराम गिरफ्तार

बीकानेर, (कासं)। गैंगस्टर रोहित गोदारा के खास गुर्गे व लूणकरनसर थाने के हिस्ट्रीशीटर दानाराम उर्फ दानिया को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी पर पुलिस ने 75 हजार का ईनाम घोषित कर रखा था।

पुलिस अधीक्षक तेजस्वनी गौतम ने बताया कि चूरू के भानीपुरा हालपता वार्ड नंबर दो लूणकरनसर निवासी दानाराम उर्फ दानिया (25) पुत्र जगदीश प्रसाद सियाग को फतेहपुर-सीकर के बीच से गिरफ्तार किया गया। आरोपी बीकानेर के दो व्यापारियों व दो क्रिकेट सटोरियों से फिरौती की योजना पर काम कर रहा था। पुलिस को सूचना मिली तो पुलिस अधीक्षक ने पुलिस निरीक्षक महेन्द्र दत्त शर्मा के नेतृत्व में नापासर एसएचओ संदीप पूनिया, साइबर सेल के हवलदार दीपक यादव, दिलीप सिंह, सिपाही श्रीराम, सूर्यप्रकाश व देवेन्द्र की टीम गठित की।

- **बीकानेर के दो व्यापारियों व दो क्रिकेट सटोरियों से फिरौती की योजना पर काम कर रहा था आरोपी**

पुलिस अधीक्षक ने बताया कि साइबर सेल की टीम हार्डकोर दानाराम की लोकेशन ट्रेस कर रही थी। इसी बीच दानाराम के हिसार में होने की सूचना मिली। तब पुलिस निरीक्षक महेन्द्र दत्त शर्मा व हवलदार दीपक यादव के नेतृत्व में टीम भेजी। पुलिस टीम को सूचना मिली की दानाराम बीकानेर की तरफ जा रहा है। पुलिस हिसार से दानाराम के पीछे लगी थी। आरोपी को फतेहपुर-सीकर के बीच घेर कर दबोच लिया। वहीं आरोपी व बीकानेर साइबर सेल से मिले इनपुट के आधार पर सीकर पुलिस ने राजू ठेहट हत्याकांड के षड्यंत्र में शामिल आरोपियों की आर्थिक मदद करने वाले सरजीत बिश्नोई को हिसार से गिरफ्तार किया। हार्डकोर सरजीत पर पुलिस मुख्यालय जयपुर की ओर से 25 हजार का ईनाम घोषित था।

हार्डकोर दानाराम पुलिस से बचने के लिए मारा-मारा फिर रहा था। वह यूपी, दिल्ली, हरियाणा, झारखंड, पश्चिम बंगाल, बिहार, महाराष्ट्र, कोलापुर, दुर्ग, गोवा, रामेश्वरम, बैंगलुरू, धर्मशाला में भेष बदल कर रहा। पुलिस अधीक्षक ने बताया कि गैंगस्टर गोदारा व उसके साथी हाई तकनीक इंटरनेट की फेक एपलीकेशन कॉलिंग एप से संपर्क में रहते हैं। दानाराम भी कॉलिंग एप के जरिए गैंगस्टर गोदारा से जुड़ा हुआ था। कॉलिंग एप के चलते बदमाशों को पकड़ना पुलिस के लिए चुनौती से कम नहीं था।

हार्डकोर दानाराम पर विभिन्न थानों में लूट, फायरिंग व फिरौती सहित 10 विभिन्न आपराधिक मामले दर्ज हैं। बीकानेर रेंज पुलिस महानिरीक्षक ओमप्रकाश ने आरोपी की गिरफ्तारी के लिए 50, पुलिस अधीक्षक ने 25 और पुलिस मुख्यालय जयपुर ने भी 25 हजार रुपए का ईनाम घोषित कर रखा था। करीब तीन महीने पहले पुलिस व जिला प्रशासन की ओर से हार्डकोर दानाराम का अवैध जमीन पर बना मकान तोड़ा गया था।

बरसात से आमजन को मिली गर्मी से राहत

गंगापुर सिटी, (निसं)। शहर सहित आसपास के क्षेत्र में तीन दिन अच्छी धूप निकलने और गर्मी बढने के बाद शुक्रवार को मौसम का मिजाज एकाएक बदल गया। सुबह पौन घंटे तक अच्छी बारिश हुई और इसके बाद रुक-रुककर बारिश का दौर चलता रहा। शुक्रवार सुबह एकाएक मौसम बदल गया।

सुबह आसमान में काली घटाएं गहराई और देखते ही देखते बूंदाबांदी शुरू हो गई। पहले तो धीमी फिर तेज बारिश होने लगी। करीब पौन घंटे तक अच्छी बारिश हुई। जिसके बाद सडकों पर पानी भर गया। तापमान में गिरावट होने से लोगों को उमस और गर्मी से राहत मिली। गंगापुर में औसत बारिश का आंकडा 550 से 600 मिमी का है और इस साल औसत बारिश का आंकडा पूरा हो चुका है। राजेन्द्र जायसवाल कानूनगो ने बताया कि इस वर्ष गंगापुर सिटी क्षेत्र में एक जनवरी से अब तक 830 मिमी से अधिक और एक जून से अब तक 716 मिमी से अधिक बारिश दर्ज की जा चुकी है। गौरतलब है कि 3 दिन पहले बारिश का दौर थम गया था। धूप पडने से गर्मी बढ गई थी। लेकिन शुक्रवार को हुई बारिश से लोगों को राहत मिली।

मूसलाधार बारिश से खेतों में भरा पानी

मूंगफली व खेतों में खड़ी बाजरे की फसल में फायदा

निवाई, (निसं)। बरसात का दौर दो दिन बाद फिर शुरू हो गया है। गत दो दिनों से शहर में कम व ग्रामीण क्षेत्र में अधिक बरसात हो रही है। गुरूवार की दोपहर बाद से मौसम में परिवर्तन शुरू हो गया था। दोपहर बाद आकाश में घने काले बादल छा गए और हल्की बरसात हुई। ग्रामीण क्षेत्र में शाम के समय तेज बारिश हुई।

जानकारी के अनुसार गुरूवार की देर रात को गांव मूण्डिया, सजिया, कनेसर, गुन्सी, लुहारा, राधागोविन्दपुरा, पलेई, जगतपुरा, सुनारा सहित आसपास के क्षेत्र में झमाझम बारिश हुई। तेज बारिश से खेतों में पानी भर गया। इससे मूंगफली व खेतों में खड़ी बाजरे की फसल में फायदा हुआ है लेकिन कटी हुई खेतों में पड़ी फसल में नुकसान हुआ है। शुक्रवार को भी ग्रामीण क्षेत्र में तेज बरसात को दौर जारी रहा। शुक्रवार की दोपहर बाद गांव सूरिया, हनोतिया बुजुर्ग, काचरिया सहित आसपास के क्षेत्र में करीब डेढ घण्टे मूसलाधार बारिश हुई जिससे खेत बरसाती पानी से भर गए। किसानों ने बताया कि बरसात हो जाने से रबी की फसल भी बुआई हो सकेगी। शुक्रवार की शाम शहर में भी हल्की बारिश हुई है। लगातार दो दिन से क्षेत्र में बरसात होने से तापमान में एक बार फिर गिरावट आ गई है जिससे दो दिन से पड़ रही गर्मी से राहत मिली है।

- **वहीं कटी हुई खेतों में पड़ी फसल में नुकसान हुआ है**

चाकू दिखाकर चेन लूटने वाली गैंग का पर्दाफाश

जयपुर। पुलिस कमिश्नरेट की स्पेशल टीम ने जवाहर सर्किल, बजाजनगर व चित्रकूट इलाके में पुरुषों को चाकू दिखाकर चेन लूटने वाली गैंग का पर्दाफाश कर शातिर चैन स्नैचर साजिद व एक खरीददार को गिरफ्तार किया है। दोनें से सोने की पांच चेन, वारदात में प्रयुक्त चाकू व 39 हजार 500 रुपए बरामद किए है। आरोपी साजिद पूर्व में

- आरोपी खरीददार गिरफ्तार, सोने की 5 चेन बरामद

पुलिस कमिश्नरेट की स्पेशल टीम ने जवाहर सर्किल, बजाजनगर व चित्रकूट इलाके में लोगों को चाकू दिखाकर चेन लूटने वाले शातिर चैन स्नैचर साजिद व एक खरीददार को गिरफ्तार किया है।

शास्त्रीनगर थाना इलाके में डकैती की योजना बनाते गिरफ्तार हुआ था।

पुलिस कमिश्नर बीजू जॉर्ज जोसफ ने बताया कि गिरफ्तार आरोपी साजिद उर्फ साहिल पुत्र गुलाम (29) निवासी संजय नगर शास्त्रीनगर और नीरज जैन पुत्र धर्मचन्द जैन (40) निवासी एलएस नगर नयाखेड़ा विद्याधर नगर है। सीसीटीवी फुटेज के आधार पर पुलिस ने वारदातों का खुलासा किया है। गिरफ्तार साजिद उर्फ साहिल दिल्ली में कपड़े की दुकान का काम करता है और पिता जयपुर में फलों का ठेला लगाता है। साजिद ने पूछताछ में बताया कि वह नाबालिग था तब से ही जेब काटना, लूट करना, पर्स, मोबाइल व चैन स्चैचिंग की वारदात करता है। टंगड़ी मारकर जेब काटने का आदि है। वारदात के बाद पटेल नगर दिल्ली जाकर लग्जरी तरीके से जीवन यापन करता है। साजिद के खिलाफ लूट, मारपीट, डकैती व स्नैचिंग के 9 प्रकरण दर्ज है। साथी मोहम्मद ओवेश से दिल्ली में बस में मिला था तब से दोनों साथ में वारदात कर रहे है। आरोपी सुनार नीरज जैन से साजिद 4-5 साल से सम्पर्क में है, जो वारदात के बाद चैनों को खरीदने का काम करता है। उसके बदले मे साहिल नीरज जैन से पैसे या सोने का सामान लेकर चला जाता है। चेन स्नैचर साजिद उर्फ साहिल से सोने की दो चैन, चाकू व 39500 रुपए बरामद किए है वहीं सुनार से सोने की तीन चैन बरामद की है। फरार मोहम्मद ओवेश वारदात के समय बाइक चलाता है।

भ्रष्टाचार में डूबी आरपीएससी को बचाने में जुटी एसीबी : देवनानी

जयपुर। पूर्व शिक्षा राज्य मंत्री और अजमेर उत्तर विधायक वासुदेव देवनानी ने ईओ और आरओ भर्ती मामले में भ्रष्टाचार को लेकर एसीबी की जांच पर कोर्ट की ओर से की गई टिप्पणी पर गहलोत सरकार के खिलाफ तीखा हमला बोला है। देवनानी ने कहा कि गहलोत सरकार आरपीएससी में बैठे अपने चहेतों को बचाने के लिए जांच एजेंसी का दुरुपयोग कर रही है। देवनानी ने कहा कि इस मामले में कोर्ट की ओर से की गई टिप्पणियां बेहद गंभीर है और एसीबी की जांच पर कई सवाल खड़े करती है। देवनानी ने कहा कि कोर्ट की टिप्पणी के बाद साफ है कि जांच एजेंसियों का दुरुपयोग कौन कर रहा है।

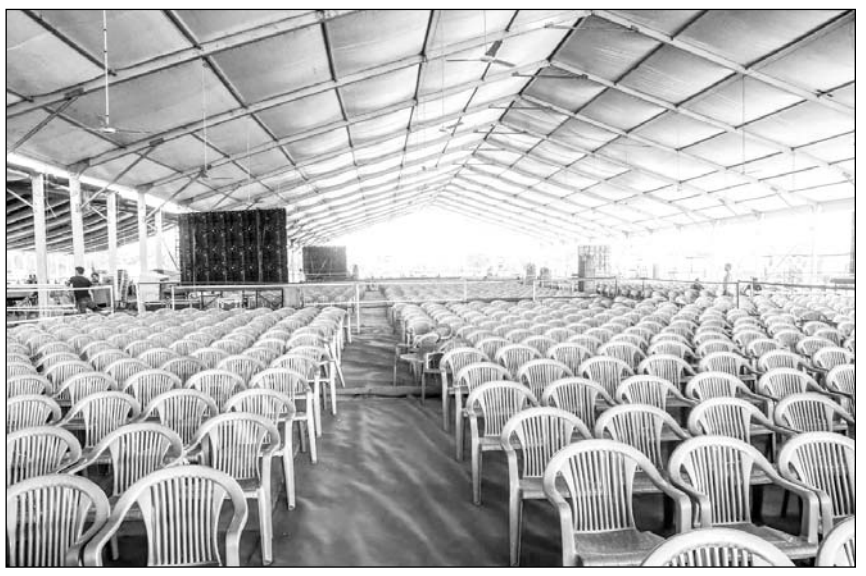

नये प्रदेश कांग्रेस कार्यालय के शिलान्यास के लिये पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी और वर्तमान अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे जयपुर आएंगे। मानसरोवर में होने वाले इस कार्यक्रम की तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। इसके बाद राहुल व खड़गे जेडीए द्वारा तैयार गांधी वाटिका का भी लोकार्पण करेंगे।

हाईकोर्ट ने राज्य सरकार पर पचास हजार रुपये का हर्जाना लगाया

अदालती आदेश की चार साल बाद भी पालना नहीं करने पर कोर्ट ने नाराजगी जताई

जयपुर, (का.सं.)। राजस्थान हाईकोर्ट ने अदालती आदेश की चार साल बाद भी पालना नहीं करने पर नाराजगी जताई है। इसके साथ ही अदालत ने राज्य सरकार पर पचास हजार रुपए का हर्जाना लगाते हुए आदेश की पालना के लिए 27 सितंबर तक का समय दिया है। अदालत ने कहा है कि हर्जाना राशि की वसूली जिम्मेदार दोषी अधिकारियों से की जा सकती है। वहीं अदालत ने अतिरिक्त मुख्य गृह सचिव और डीजीपी को हाजिर होकर शपथ पत्र पेश कर यह

- हाईकोर्ट ने दोषी अधिकारियों से वसूलने की छूट दी

बताने को कहा है कि अब तक आदेश की पालना नहीं करने का क्या कारण है। अदालत ने अपने आदेश में स्पष्ट किया है कि यदि आगामी सुनवाई तक आदेश की पालना कर ली जाती है तो दोनों अधिकारियों को पेश होने की जरूरत नहीं है। जस्टिस महेन्द्र कुमार गोयल की एकलपीठ ने यह आदेश गुड्डी देवी की ओर से दायर अवमानना याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए। सुनवाई के दौरान राज्य सरकार की ओर से आदेश की पालना के लिए एक सप्ताह का समय मांगा गया। जिसका विरोध करते हुए याचिकाकर्ता की ओर से कहा गया कि अदालत ने करीब चार साल पहले याचिकाकर्ता को परिलाभ देने के आदेश दिए थे, लेकिन अब तक आदेश की पालना नहीं की गई। ऐसे में दोषी अफसरों को अवमानना के लिए दंडित किया जाए। इस पर अदालत ने राज्य सरकार को पचास हजार रुपए के हर्जाने की शर्त पर 27 सितंबर तक का समय देते हुए पालना नहीं होने पर एसीएस गृह व डीजीपी को हाजिर होने को कहा है। याचिका में कहा गया कि कांस्टेबल भर्ती-2018 में चयन नहीं होने पर याचिकाकर्ता ने हाईकोर्ट में याचिका दायर की थी। जिस पर सुनवाई करते हुए हाईकोर्ट ने 18 अक्टूबर 2019 को याचिकाकर्ता को नियुक्ति देने के आदेश देते हुए परिलाभ अदा करने को कहा था।

परिवर्तन संकल्प महासभा की डगर रिंग रोड से आसान होगी : डॉ. सौम्या

जयपुर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की25 सितंबर को जयपुर के दादिया में प्रस्तावित परिवर्तन संकल्प महासभा की व्यवस्थाओं को संभालने की जिम्मेदारी निभा रही महिला मोर्चा की पदाधिकारियों का एक समूह शुक्रवार को भाजपा प्रदेश कार्यालय से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के समर्थन में नारे लगाते हुए दादिया के लिए रवाना हुआ।

- पीएम मोदी की ''परिवर्तन संकल्प महासभा'' के लिए महिला मोर्चा की पदाधिकारियों ने मंदिर दर्शन के बाद सभास्थल पर किया श्रमदान : रक्षा भंडारी

महिला मोर्चा प्रदेशाध्यक्ष रक्षा भंडारी ने बताया कि महिला मोर्चा की पदाधिकारियों ने दादिया पहुंचकर हनुमान मंदिर में दर्शन किए, उसके उपरांत पांडाल स्थल पर व्यवस्था हेतु स्वच्छता अभियान चलाया। इसके अलावा महिलाओं ने कार्य विभाजन को लेकर एक बैठक की, जिसमें सभी महिलाओं को अलग-अलग व्यवस्थाओं का जिम्मा दिया गया। जिसमें पार्किंग व्यवस्था, पेयजल व्यवस्था, बैठक व्यवस्था सहित सभास्थल तक पहुंचने के लिए वाहनों की व्यवस्था शामिल है।

जयपुर ग्रेटर महापौर सौम्या गुर्जर ने बताया कि पूर्व में राजनैतिक सभाओं और रैलियों में ट्रैफिक जाम और अव्यवस्था की खबरें आती रही हैं, लेकिन इस बार पीएम मोदी की ''परिवर्तन संकल्प महासभा'' के लिए शहर से बाहर दादिया गांव में सभास्थल चिन्हित किया गया है। सभास्थल की कनेक्टिविटी की बात करें तो यहां रिंग रोड से चारों ओर से आने में सुविधा होगी जिसमें अजमेर रोड से रिंग रोड होते हुए लोग आ सकते हैं, वहीं टोंक रोड से आने वाले लोग बीलवा होते हुए आ सकते हैं, आगरा रोड से आने वाले लोग कानोता होते हुए सभास्थल पहुंच सकेंगे इसके अलावा सीकर रोड से आने वाले लोग झोटवाड़ा होते हुए रिंग रोड पकड़ सकते हैं।

शमीम अहमद वक्फ बोर्ड में सदस्य बने

जयपुर। अल्पसंख्यक मामलात एवं वक्फ विभाग के शासन सचिव कृष्ण कुणाल ने आदेश जारी कर एडवोकेट शमीम अहमद कुरैशी को राजस्थान वक्फ अधिकरण में पुन: तीन वर्ष के लिए सदस्य मनोनीत किया है।

जयपुर में एयर कमोडोर सत्येंद्र शर्मा ने माइक्रोलाइट एयरक्राफ्ट में उड़ान भरी

जयपुर, (का.सं.)। राजस्थान के उपमहानिदेशक ने पदभार ग्रहण करने के बाद पहली बार माइक्रोलाइट प्रशिक्षण विमान का प्रथम राजस्थान एयर स्क्वाड्रन एनसीसी जयपुर एयरपोर्ट पर स्थित हैंगर का निरीक्षण किया।

जयपुर ग्रुप मुख्यालय जयपुर के तत्वावधान में सांगानेर अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर एन.सी.सी. कैडेट्स की माइक्रोलाइट विमान प्रशिक्षण का आयोजन प्रथम राजस्थान एयर स्क्वाड्रन एन.सी.सी.जयपुर के कमान अधिकारी ग्रुप कैप्टन नीरज अंबा के नेतृत्व में किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में जयपुर के महाविद्यालयों के सीनियर डिवीजन के कैडेट्स ने भाग लिया।

आज का प्रशिक्षण ऐतिहासिक रहा क्योंकि राजस्थान के उपमहानिदेशक एयर कमोडोर सत्येंद्र शर्मा ने खुद माइक्रोलाइट विमान में उड़ान भरी और एन.सी.सी. कैडेट्स को विमान उड़ान संबंधित मूलभूत सिद्धांतों से अवगत कराया एवं हौसला अफजाई करते हुए उनका मनोबल बढ़ाया। माइक्रोलाइट 2 सीटर वाला प्रशिक्षण विमान है जिसका नाम ''गरुड़'' दिया गया है माइक्रोलाइट फ्लाइंग एन सी सी एयर विंग के कैडेट्स को वायु सेना में जाने को प्रेरित करती है।

राजस्थान के उपमहानिदेशक एयर कमोडोर सत्येंद्र शर्मा ने खुद माइक्रोलाइट विमान में उड़ान भरी और एन.सी.सी. कैडेट्स को विमान उड़ान संबंधित मूलभूत सिद्धांतों से अवगत कराया एवं हौसला अफजाई करते हुए उनका मनोबल बढ़ाया।

एन.सी.सी.के पूर्व चीफ ऑफिसर नंदकिशोर शर्मा मीडिया प्रभारी ने बताया कि राजस्थान के उपमहानिदेशक को 5000 घंटे का वायुयान उड़ाने का अनुभव के साथ भारतीय वायुसेना की लडाकू विमान शाखा के फ्लाइंग पायलट है जिन्होंने वायु सेवा के विभिन्न वायुयान उड़ाए हैं एवं वे स्वयं भी वायु सेवा के विमानन प्रशिक्षक भी रहे हैं।

राजस्थानी संगीत का आनंद लिया विदेशी मेहमानों ने

जयपुर। जयपुर बाय नाइट (जेबीएन) के पहले दिन शुक्रवार शाम को देशी और विदेशी पर्यटकों व मेहमानों ने जयगढ़ फोर्ट पर राजस्थान की अद्भुत संस्कृति, विरासत और संगीत का अविस्मरणीय अनुभव प्राप्त किया। राजस्थान मूल के प्रख्यात गायक कुतले खान ने केसरिया बालम, मूमल, सानू इक पल चैन ना आवे, छाप तिलक, मस्त कलंदर, ये जो हल्का हल्का सुरूर है, मस्त नजरों से अल्लाह बचाए आदि मंत्रमुग्ध करने वाला संगीत प्रस्तुत किया। वहीं गुलाबी शहर की विरासत और संस्कृति का विशेष प्रदर्शन देखने को मिला।

टाटियावास टोल प्लाजा पर 35 हजार रुपए हर्जाना

जयपुर, (का.सं.)। जिला उपभोक्ता आयोग, जयपुर प्रथम ने वाहन से पचास रुपए अधिक टोल वसूली करने को सेवा दोष माना है। इसके साथ ही आयोग ने टाटियावास टोल प्लाजा व जयपुर-रींगस टोल रोड प्रा.लि. के मैनेजर पर 35 हजार रुपए हर्जाना लगाया है। वहीं आयोग ने परिवादी से अधिक वसूले गए वसूले 50 रुपए भी 3 फरवरी 2016 से भुगतान करने तक नौ फीसदी ब्याज सहित देने को कहा है। आयोग अध्यक्ष सूबेसिंह व सदस्य नीलम शर्मा ने यह आदेश गिरधारी लाल के परिवाद पर दिए।

आयोग ने अपने आदेश में कहा कि रसीद पर बार कोड के अलावा नंबर भी थे और पूरा सिस्टम ही कंप्यूटराईज्ड होने के चलते वाहन की सभी जानकारी उसमें होती है। ऐसे में विपक्षी केवल फटी हुई पर्ची का हवाला देकर टोल की अवैध वसूली नहीं कर सकते। विपक्षी को इसकी जांच करनी चाहिए थी, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया है जो साफ तौर पर विपक्षी का सेवादोष ही है। परिवाद में कहा गया कि परिवादी ने 27 दिसंबर 2015 को कार से सीकर जाते समय टोल प्लाजा, टाटियावास के काउंटर पर 80 रुपए जमा करवाकर रसीद ली थी। इसकी वैधता 28 दिसंबर तक थी। वहीं जब परिवादी रसीद की वैधता अवधि में सीकर से वापस टोल प्लाजा आया तो टोल कर्मचारियों ने उसकी रसीद को फटी हुई बताया और उससे टोल के लिए 50 रुपए वसूल लिए। परिवाद में बताया गया कि रसीद पर नंबर साफ तौर पर अंकित थे। इसके बावजूद उससे पचास रुपए की जबरन वसूली ली।

एस.आई. के घर से लाखों रुपए के गहने-नकदी चोरी

जयपुर । मानसरोवर थाना इलाके में क्राइम ब्रांच में तैनात एसआई को परिवार के साथ सवाई माधोपुर जाना भारी पड़ गया।

सूने मकान को निशाना बनाते हुए अज्ञात नकबजन लाखों रुपए के गहने व हजारों की नकदी पर हाथ कर फरार हो गए। पीड़ित को मामले की जानकारी मेले से लौटने पर चली। जिसमें बाद पीड़ित ने थाने पहुंच अज्ञात नकबजनों के खिलाफ चोरी का मामला दर्ज कराया। पुलिस ने मामला दर्ज कर सीसीटीवी फुटेज के आधार पर नकबजनों की तलाश शुरू कर दी है।

पुलिस के अनुसार जीवन विहार निवासी जय किशन (38) 17 सितंबर से 20 सितम्बर तक सवाई माधोपुर में मेले की सुरक्षा व्यवस्था की ड्यूटी पर गए हुए थे। सवाई माधोपुर में मेले होने के कारण वो अपने परिवार को मेला दिखाने के लिए अपने साथ ले गए।

वापस लौटे तो मकान के मुख्य गेट पर ताला लगा हुआ था और अंदर का ताला टूटा पड़ा था। अंदर जाकर देखा तो सारा सामान बिखरा हुआ मिला।

अलमारी संभालने पर ज्वैलरी गायब मिली। बताया जा रहा है कि अज्ञात नकबजन अलमारी में रखा 7 तोला सोने का हार,ढ़ाई तोले सोने का हार,एक तोले सोने के 4 झूमके, 8 ग्राम सोने की चेन,12 ग्राम सोने की चेन, 8 ग्राम सोने की अंगूठी,एक हीरे की अंगूठी,17 ग्राम सोने का मंगल सूत्र,8ग्राम दो सोने की बाली,250 ग्राम चांदी की पायल,चुडिया,बिछिया व 70 हजार रुपए नकद चोरी कर फरार हो गए।

हनीट्रैप में फांसकर ब्लैकमेल करने वाली गैंग का पर्दाफाश

मास्टर माइंड समेत पांच बदमाश पुलिस के हत्थे चढ़े

जयपुर (कासं)। खोह नागोरियान थाना पुलिस ने रेलवे कर्मचारी को हनीट्रैप में फांसकर ब्लैकमेल करने वाली गैंग के मास्टर माइंड व युवती समेत पांच बदमाशों को गिरफ्तार किया है।

पुलिस ने बताया कि जामडोली आगरा रोड निवासी युवक ने रिपोर्ट दर्ज करवाई है। वह रेलवे में जॉब करता है। करीब 2 महीने पहले उसके मोबाइल पर एक अनजान लड़की का फोन आया और खुद का नाम अंजली बताकर मुझे पहले से जानने की कहकर बात करने लगी। फिर अंजली ने 16 सितंबर कॉल कर कहा कि हमारा नया मकान देखने आ जाओ, जिससे अपना मिलना भी हो जाएगा। 16 सितंबर को दोबारा कॉल कर नया मकान देखने बुलाया। लोकेशन भेजकर युवती ने गोवर्धन धाम कॉलोनी लुणियावास बुलाया और गेट खोलकर अंदर ले गई। कुछ देर बाद अंजली के

- रेलवे कर्मचारी को घर बुला मारपीट की व अश्लील वीडियो बनाया, रुपए वसूले

साथ चार युवक भी कमरे में आ गए। उन लोगों ने मारपीट कर कपड़े उतरवा लिए और लड़की से संबंध बनाने के लिए कहा। बदमाशों ने लड़की के भी कपड़े उतरवा दिए और फिर दोनों के एक साथ फोटो-वीडियो बना लिए। न्यूड फोटो-वीडियो को भेजने की धमकी देकर 1 लाख रुपए मांगे। इज्जत बचाने के लिए युवक ने परिचितों से रुपए मंगवाकर ऑनलाइन ट्रांसफर कर दिए। पुलिस ने मुख्य सरगना ओम प्रकाश (41) निवासी नादौती करौली, रिंकू कुमार उर्फ अजय (21) निवासी बालघाट करौली, सोनू मीणा (21) निवासी पीलोदा गंगापुर सिटी, राजूदास उर्फ राहुल (28) निवासी मथुरा उत्तर प्रदेश और शिवानी राजपूत (22) निवासी गौतम नगर उत्तर पदेश को गिरफ्तार किया है।

पूछताछ में सामने आया है कि सरगना ओम प्रकाश ने पूरी प्लानिंग बनाई थी। वह अपने चचेरे भाई को हनीट्रैप में फंसाकर 40 लाख रुपए ऐंठना चाहता था। इसके लिए उसने अपनी महिला मित्र शिवानी को प्लानिंग के तहत चचेरे भाई को फंसाने के लिए तैयार किया। शिवानी ने दो महीने में पूरी तरह दोस्ती में पीड़ित को फांस लिया था। इसके बाद घर पर हनीट्रैप के लिए न्यूड वीडियो बनाने के लिए दोस्तों को बुलाया। पीड़ित के घर पहुंचने पर शिवानी उसे रोकने का प्रयास करती रही। गैंग के सदस्यों के पहुंचने पर मारपीट कर न्यूड फोटो-वीडियो बनाए गए।

तेजा दशमी 25 को, कई जगह भरेंगे मेले

जयपुर । लोक देवता तेजाजी का जन्मोत्सव 25 सितंबर को तेजा दशमी के रूप में भक्तिभाव से मनाया जाएगा। तेजाजी के मंदिरों में मेले जैसा माहौल रहेगा। श्रद्धालु नारियल, पुआ-पकौडी, खीर सहित अन्य व्यंजनों का भोग लगकार मनौति मांगेगे। कई मंदिरों में पूर्व संध्या पर 24 सितंबर को रात्रि जागरण होंगे। मानसरोवर के वीटी रोड स्थित तेजाजी मंदिर में हजारों की संख्या में श्रद्धालु दर्शन करने पहुंचेंगे। पुरानी बस्ती, सीकर रोड, अंबावाडी, झोटवाडा, प्रतापनगर स्थित तेजाजी मंदिरों में भी तेजा दशमी की तैयारियां जोरशोर से चल रही है। न्यू सांगानेर रोड मुख्य सोडाला स्थित प्राचीन तेजाजी मंदिर में 25 सितंबर की सुबह से ही श्रद्धालुओं के जुटने का सिलसिला शुरू हो जाएगा।

सांगा बाबा का 500 किलो दूध से अभिषेक

सांगा बाबा भौमियां जी मंदिर का दो दिवसीय पाटोत्सव संपन्न

जयपुर (कासं)। राजा सवाई मानसिंह प्रथम के नाम के साथ जुड़े सांगानेर के त्रिपोलिया गेट स्थित सांगा बाबा भौमियाजी मंदिर का 507 वां दो दिवसीय पाटोत्सव शुक्रवार को विभिन्न धार्मिक आयोजनों के साथ संपन्न हुआ। वार्षिक मेले में बडी संख्या में श्रद्धालुओं ने सांगा बाबा भौमियां जी महाराज को धोक दी और श्रीफल अर्पित किए। सुबह नियमित पूजा-अर्चना के बाद सांगा बाबा भौमियां जी महाराज का वेद मंत्रोच्चार के साथ पांच सौ किलो दूध से अभिषेक किया गया। मुख्य यजमान वरिष्ठ पत्रकार डॉ. गोपाल शर्मा ने सांगा बाबा के भव्य मंदिर बनने की कामना के साथ पूजा-अर्चना कर अभिषेक किया।

मंदिर के मंदिर के पुजारी सत्येंद्र अजमेरा, शैलेंद्र अजमेरा, विरेन्द्र अजमेरा (माहेश्वरी महाजन) ने पूजा-अर्चना करवाकर आशीर्वाद प्रदान किया। इस दौरान विद्वानों ने सस्वर रुद्री पाठ किए।

बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने सांगा बाबा भौमियां जी महाराज का अपने हाथों से दुग्धाभिषेक किया। अभिषेक के बाद दूध को चरणामृत प्रसाद के रूप में वितरित किया गया।

अभिषेक संपन्न होने के बाद सांगा बाबा भौमियां जी महाराज को सिंदूरी चोला धारण कराकर नवीन पोशाक धारण कराई गई। मालपुए और खीर का भोग लगाया गया। बडी संख्या में श्रद्धालुओं ने श्रीफल भेंट कर मनौती मांगी। दोपहर को मंदिर प्रांगण में भजन हुए। शाम को भजन संध्या का आयोजन किया गया। मनोज शर्मा सहित अन्य भजन गायकों ने देर रात तक हाजिरी दी। मुख्य अतिथि डॉ. गोपाल शर्मा ने महाआरती की।

एटीएम बूथ में तोड़फोड कर नकदी लूटने का प्रयास

जयपुर । ट्रांसपोर्ट नगर थाना इलाके में अज्ञात दो बदमाशों ने एटीएम बूथ में घुसकर उसे तोड़फोड कर रूपये लूटने का प्रयास करने का मामला सामने आया है। जानकारी मिलने पर केयरटेकर ने दोनो का पकड़ने का प्रयास किया, लेकिन दोनो बदमाश उसे धक्का देकर फरार हो गए। पीड़ित ने मामले की जानकारी तुरंत पुलिस को दी। पुलिस ने दोनो बदमाशों के खिलाफ एटीएम से छेड़छाड़ व नकदी चोरी का प्रयास का मामला दर्ज कर फुटेज के आधार पर तलाश शुरू कर दी है। थानाधिकारी धर्म सिंह ने बताया कि केयरटेकर जितेंद्र मौर्य ने मामला दर्ज कराया कि 19 सितंबर की देर रात दो लड़के एटीएम से छेड़छाड़ कर रहे थे। जिन्हे पकड़ने का प्रयास किया तो वह धक्का देकर फरार हो गए। जितेंद्र ने उन्हे पकड़ने का प्रयास में कच्ची बस्ती तक पीछा भी किया लेकिन आरोपी आंखों से ओझल हो गए। एटीएम मशीन को संभाला तो शटर की असेंबली टूटी हुई मिली और लोहे की पत्ती में फंसे हुए 500 के 20 नोट मिले।

मंत्रालयिक एकता मंच की समिति से वार्ता संपन्न

जयपुर (कासं)। मंत्रालयिक एकता मंच की शुक्रवार को मंत्रालयिक कर्मियों की मांगों के लिए प्रमुख शासन सचिव कार्मिक हेमंत गेरा की अध्यक्षता में गठित समिति से मंत्रालयिक संवर्ग की ग्रेड पे संशोधन व कनिष्ठ सहायक की शैक्षिणक योग्यता स्नातक करने पर वार्ता हुई।

मंत्रालयिक एकता मंच द्वारा कनिष्ठ सहायक की वेतन विसंगति सुधारने के लिए वर्ष 1998 से निरंतर किए गए संघर्ष, राजस्थान राज्य कर्मचारी संघ के साथ किए गए लिखित समझौते तथा उसे यतेंद्र सिंह कमेटी के नाम पर 2007 तक इस लिखित समझौते को नकारे जाने के बारे में बताया। वर्ष 2013 में तत्कालीन प्रमुख वित्त सचिव डॉक्टर गोविंद शर्मा की अध्यक्षता में गठित समिति की कनिष्ठ सहायक का वेतन बढ़ाने की सिफारिश, 2016 में विधानसभा प्रश्न का लिखित में दिए गए जवाब आदि के साक्षी देते हुए कनिष्क की वेतन व समिति को सामने रखते हुए आरंभिक वेतन 25500 किए जाने की मांग की गई। इसी के साथ दूसरी पदोन्नित पर ग्रेड पे 4200 किए जाने की मांग के पक्ष में तर्क रखे। समिति में प्रमुख शासन सचिव हेमंत गेरा, वित्त सचिव बजट रोहित गुप्ता, संयुक्त सचिव कार्मिक जय सिंह, संयुक्त सचिव वित्त सुरेश वर्मा मौजूद थे। वार्ता में मंत्रालय के एकता मंच के शिष्टमंडल में प्रांतीय कोर कमेटी सदस्य एवं एकीकृत महासंघ प्रदेश अध्यक्ष गजेंद्र राठौड़, राजस्थान राज्य कर्मचारी संघ के प्रदेश अध्यक्ष राजेश पारीक, राजस्थान मिनिस्टरियल सर्विसेज एसोसिएशन के प्रदेश अध्यक्ष सुरेश धाभाई, मंत्रालयिक एकता मंच के प्रदेश प्रवक्ता देवेंद्र सिंह नरूका शामिल थे।

सुगंध दशमी पर कल धूप से महकेंगे जिनालय

जयपुर । दिगंबर जैन समाज दशलक्षण महापर्व के तहत रविवार को सुगंध दशमी मनाएगा।कर्मों की निर्जरा के लिए श्रद्धालु श्रीजी के सामने चंदन की धूप का अग्नि पर खेवन करेंगे।

मान्यता है कि धूप के पवित्र वातावरण से भगवान खुश होकर मानव को मोक्ष पद का रास्ता दिखलाते हैं। इसी भावना के साथ सभी जैन मंदिरों में सुगंध दशमी पर धूप खेई जाती है। कई मंदिरों से अंहिसा रैली निकाली जाएगी।

फायरिंग के मामले में फरार चल रहे आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार किया

आरोपी महिला का भेष रख जयपुर भागने की फिराक में था

भरतपुर (निस)। फायरिंग के मामले में फरार चल रहे आरोपी को मथुरा गेट थाना पुलिस ने गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की है। आरोपी महिला का भेष रख जयपुर भागने की फिराक में था। लेकिन इससे पहले ही डीएसटी टीम ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। इसके बाद साड़ी पहने आरोपी को उसी हाल में कोर्ट ले गए। जानकारी के अनुसार फायरिंग की घटना 18 सितंबर की है। पुष्कर सिंह ने मथुरा गेट थाने में शिकायत देते हुए बताया था कि 18 सितंबर रात 9 बजे से 10 बजे के बीच की है। पुष्कर जघीना गेट पर वह सरस बूथ का पार्लर चलाता है। यहां पुष्कर का साला सचिन बैठा हुआ था। सचिन की सरस बूथ पर किसी से कहासुनी हो गई। सचिन ने पुष्कर को फोन कर घटना के बारे में बताया। इसके बाद पुष्कर मौके पर पहुंचा। वहां पर अमित टेड़ा नाम का युवक था, जिसने वहां मौजूद एक युवक की पिटाई कर दी। इसके बाद पुष्कर ने दोनों को समझाकर वहां से भेज दिया। कुछ देर बाद अमित टेड़ा अपने साथी सोनू बघेल और अन्य लड़के के साथ बाइक से सरस बूथ पार्लर पर आया और आते ही फायर कर दिया। इसमें पुष्कर बाल-बाल बचा। पुष्कर जघीना गेट के पास से जा रही नहर पर जाकर छुप गया और अमित अपने साथियों के साथ पुष्कर को ढूंढता रहा। लेकिन, पुलिस को आता देख बदमाश वहां से फरार हो गए थे। घटना के दूसरे दिन ही पुलिस ने अमित टेढ़ा को गिरफ्तार कर लिया था लेकिन फायरिंग करने वाला मुख्य आरोपी सोनू बघेल फरार था। 21 सितंबर को पुलिस को सूचना मिली की घटना का मुख्य आरपी सोनू बघेल शास्त्री पार्क के आसपास इलाके में घूम रहा है और भेष बदलकर कहीं भागने की फिराक में है। इसके बाद पुलिस मौके पर पहुंची और बदमाश की तलाशी ली तो बदमाश वहां महिला का भेष रखकर खड़ा हुआ था। जब पुलिसकर्मियों ने सोनू बघेल से उसका नाम पता पूछा तो वह भागने लगा। इसके बाद पुलिस ने उसे घेराबंदी कर गिरफ्तार कर लिया।

फायरिंग के मामले में फरार चल रहे आरोपी को मथुरा गेट थाना पुलिस ने गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की।

विद्या भारती का क्षेत्रीय प्रधानाचार्य सम्मेलन सोमवार से

हिण्डौन सिटी, (कासं)। विद्या भारती संस्थान करौली द्वारा संचालित उच्च माध्यमिक आदर्श विद्या मंदिर हिंडौन में 25 से 28 सितंबर 2023 तक विद्या भारती राजस्थान के 1000 प्रधानाचार्य एवं 200 अन्य वरिष्ठ कार्यकर्ताओं का सम्मेलन आयोजित होगा।

इस सम्मेलन में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह डॉक्टर कृष्ण गोपाल का प्रबोधन रहेगा। साथ ही करौली डांग क्षेत्र के प्रसिद्ध संत पूज्य महाराज श्री हरिद्रानंद जी सरस्वती ध्रुव घटा वालों का पावन सानिध्य भी मिलेगा।विद्या भारती के अखिल भारतीय महामंत्री अवनीश भटनागर एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ राजस्थान के क्षेत्र प्रचारक निंबाराम का भी मार्गदर्शन रहेगा। सम्मेलन को प्रभावी बनाने की दृष्टि से तैयारियों के संबंध में विद्या भारती के क्षेत्रीय संगठन मंत्री शिवप्रसाद द्वारा विद्यालय परिसर का अवलोकन करते हुए आयोजन प्रबंधकों के साथ सम्मेलन को यशस्वी बनाने की दृष्टि से कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन किया तथा उन्होंने बताया कि विद्या भारती विश्व का सबसे बड़ा गैर सरकारी शिक्षण संस्थान है जिसमें 13000 से अधिक विद्यालय, 1.5 लाख आचार्य/आचार्या, 35 लाख विद्यार्थियों को संस्कार युक्त शिक्षा दी जा रही है।

कार्यालय ग्राम पंचायत अनियाला पंचायत समिति खंडार
जिला सवाई माधोपुर (राज.)

क्रमांक:2023-24/33 दिनांक-21.09.2023

ई-निविदा सूचना संख्या 01/2023-24

वित्तीय वर्ष 2023-24 के अंतर्गत ग्राम पंचायत अनियाला में महात्मा गांधी नरेगा योजना एवं अन्य योजनान्तर्गत संचालित समस्त स्वीकृत निर्माण कार्यों हेतु आनुसांगिक सामग्री आपूर्ति के लिए GST में पंजीकृत सक्षम अनुभव प्राप्त फर्मों से अथवा राजस्थान सरकार के निर्माण विभागों में सी-श्रेणी या उच्च श्रेणी में पंजीकृत संवेदकों से निम्नानुसार निविदा दरें ई-प्रोक्योरमेन्ट पद्धति से वेबसाइट eproc.rajasthan.gov.in पर ऑनलाइन निविदाए आमंत्रित की जाती है। निविदा से संबंधित नियम शर्तें सम्बन्धी दस्तावेज लोक उपापन की वेबसाइट http://sppp.rajasthan.gov.in, http://eproc.rajasthan.gov.in पर देखी एवं डाउनलोड किया जा सकते है।

NIB Code- ZSM2324A0259 UBN is- ZSM2324GLOB00291

सरपंच ग्राम पंचायत अनियाला पंचायत समिति खण्डार (स.मा.)

ग्राम विकास अधिकारी ग्राम पंचायत अनियाला पंचायत समिति खण्डार (स.मा.)

भगवान श्री देवनारायण के विशाल मेले में उमड़ा श्रृद्धा का सैलाब

गंगापुर सिटी, (निसं)। जयपुर रोड हिंगोटिया स्थित भगवान देवनारायण के मंदिर पर देवसप्तमी के पावन पर्व के उपलक्ष्य में शुक्रवार को गुर्जर समाज का विशाल मेला आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पूर्व विधायक मानसिंह गुर्जर, विशिष्ट अतिथि सभापति शिवरतन अग्रवाल, प्रधान श्रीमती मंजू गुर्जर, पूर्व प्रधान हरगोविंद कटारिया ,बहादुर सिंह गुर्जर,पार्षद धनसींह मावई रहे। मेले की पूर्व संध्या पर गुरुवार को रात्रि जागरण में जोधपुरिया के मोहनलाल भोपा एवं पार्टी के द्वारा रात्रि को भगवान का फूल प्रकाश किया गया और भजन संध्या हुई जिसमें भगवान देवनारायण के गीतों द्वारा रात्रि जागरण किया गया। विभिन्न गांवों से पैदल यात्रा अपना झंडा लेकर आई। मेला समिति के द्वारा पैदल यात्रियों का स्वागत किया एवं झंडा पूजन किया। शुक्रवार को देव सप्तमी पर देवनारायण मंदिर प्रांगण में मेला एवं विशाल आमसभा आयोजित की। विशाल आमसभा में समाज के युवाओं से संगठित होकर कार्य करने के साथ साथ शिक्षित होने पर जोर दिया।साथ ही समाजहित में कार्य करने,समाज में व्याप्त बुराइयों फिजूलखर्ची,शराब सेवन दूर करने का सभी से आव्हान किया।उन्होंने कहा कि एकजुटता और शिक्षित होने पर ही समाज की तरक्की संभव है। मुख्य अतिथि पूर्व विधायक मानसिंह गुर्जर ने बैठक को संबोधित करते हुए समाज के युवाओं से अच्छी शिक्षा ग्रहण करने एवं बालिका शिक्षा को बढावा देने पर जोर दिया कहा कि शिक्षा ही सबसे बडी पूंजी हैं जो समाज जितना शिक्षित होगा वह समाज इतना ही विकसित होगा। गुर्जर ने कहा की हमे साथ मिलकर एक अच्छे राष्ट्र और अच्छे समाज का निर्माण करने में अपनी भूमिका निभानी है साथ ही समाज को संगठित रहने का आव्हान करते हुए कहा कि संगठन में ही शक्ति है। साथ ही सभापति शिवरतन अग्रवाल,प्रधान मंजू गुर्जर,पूर्व प्रधान हरगोविंद कटारिया, बहादुर सिंह गुर्जर, पार्षद धनसिंह मावई आदि ने भी उपस्थित जनसेलाव को संबोधित किया। इसी के साथ हर वर्ष की तरह भगवान देवनारायण की माला को रामजीलाल मोतीपुरा ने 1111०1 रुपए की बोली लगाकर ली।

इस दौरान गुर्जर समाज के पंच पटेलों ने मुख्य अतिथि पूर्व विधायक मानसिंह गुर्जर का माला एवं साफा पहनाकर भव्य स्वागत किया। कार्यक्रम का मंच संचालन रामकेश छंगा ने किया। इस अवसर पर शिवलाल गुर्जर ,रामेश्वर बाऊजी, ओमप्रकाश पार्षद, कांजी ,रामराज फौजी, श्री मोहन ,रामकेश मास्टर, भरत लाल, मोहर सिंह फौजी, फतेह सिंह, पप्पू, नमो, रघुनाथ, राजाराम पटवारी ,मुनीम आखोदिया ,भवानी सिंह आदि उपस्थित रहे।

गंगापुर सिटी। गुर्जर समाज को संबोधित करते पूर्व विधायक।

साधु ने दम तोड़ा

धौलपुर, (निसं)। तीर्थराज मचकुंड धौलपुर के पास स्थित मंगल भारती मंदिर पर एक साधु की चाय पीते वक्त तबीयत बिगड गई। तबीयत बिगडने के बाद साथ में मौजूद दूसरे साधु उसे लेकर जिला अस्पताल धौलपुर पहुंचे। जहां अस्पताल पहुंचने से पहले ही साधु ने दम तोड़ दिया। जिसके बाद अस्पताल प्रबंधन की सूचना पर पुलिस ने मृतक के शव को जिला अस्पताल की मोर्चरी में रखवा दिया। मृतक के शव को अस्पताल लेकर पहुंचे साथी साधुओं ने बताया कि मृतक भगत (70) निवासी भोगीराम नगर कॉलोनी मंगल भारती हनुमान मंदिर पर पूजा अर्चना करता था। 2 दिन तक चले मचकुंड मेले में हुई थकान के बाद सुबह के पहर साधु ने जैसे ही चाय पी तो अचानक उसकी तबीयत बिगड गई। साधु की तबीयत खराब होते ही मौके पर मौजूद दूसरे साधु लोगों की मदद से उसे लेकर जिला अस्पताल धौलपुर पहुंचे। जहां इमरजेंसी में तैनात ड्यूटी डॉक्टर ने साधु को मृत घोषित करते हुए उसके शव को जिला अस्पताल की मोर्चरी में रखवा दिया। घटना को लेकर कोतवाली पुलिस ने साधु के परिजनों को सूचना दी है। जिनके आने के बाद मोर्चरी में रखवाए गए साधु के शव का पोस्टमार्टम कराया जाएगा।

कार्यालय प्राचार्य एवं अध्यक्ष राजकीय महाविद्यालय विकास समिति, गंगापुर सिटी

क्रमांक: 3113 दिनांक: 15.9.2023

खुली निविदा सूचना

इस महाविद्यालय में विकास समिति मद के अन्तर्गत 30.06.2024 तक हेतु सेवा प्रदाता एजेन्सी के माध्यम से मैन पावर आपूर्ति हेतु सील बन्द लिफाफे में निविदाऐं आमंत्रित की जाती है।

क्र. सं.	कार्य का विवरण	संख्या	अनुमानित लागत	निविदा शुल्क	अमानत राशि
1	मशीन विद कम्प्यूटर ऑपरेटर आपूर्ति कार्य अर्द्धकुशल कार्मिक आपूर्ति (बुक लिफ्टर, लैंब बॉय) अकुशल कार्मिक आपूर्ति (सफाई कर्मचारी, सहायक कर्मचारी)	02 02 07	09 लाख	500	18000

निविदा प्रपत्र कार्यालय में निर्धारित शुल्क जमा कराकर दिनांक 30.09.2023 को दोपहर 12.00 बजे तक प्राप्त किए जाकर दिनांक 30.09.2023 को दोपहर 1.00 बजे तक कार्यालय में जमा करवाये जा सकते है। प्राप्त निविदाऐं उसी दिन दोपहर 2.00 बजे उपस्थित निविदादाताओं के समक्ष खोली जावेगी। निविदा के सम्बन्ध में अन्य जानकारी इस कार्यालय से किसी भी कार्य दिवस में प्राप्त की जा सकती है।

डॉ. रमेश चंद बैरवा
प्राचार्य एवं अध्यक्ष
राजकीय महाविद्यालय विकास समिति गंगापुर सिटी

NIB: ECD2324A0174

कार्यालय नगर परिषद, हिण्डौन सिटी, जिला करौली (राज.)

क्रमांक:-न.प.हि./15802 दिनांक: 21.09.2023

लोक सूचना

क्र.सं.	नाम	पता
1.	श्री विजय सिंह पुत्र श्री रेती लाल	हिण्डौन सिटी
2.	श्री हरदम सिंह पुत्र श्री रेती लाल	हिण्डौन सिटी
3.	श्री रूप सिंह पुत्र श्री रेती लाल	हिण्डौन सिटी

ने कार्यालय में नीचे उल्लेखित भूमि का गैर कृषि प्रयोजन के उपयोग हेतु ऐसी भूमि के अपने अभिवृति अधिकारों के निर्वापन के लिए आवेदन प्रस्तुत किया हैं, अर्थात्

क्र.सं.	जिला एवं तहसील	ग्राम/कस्बा का नाम	खसरा नम्बर	क्षेत्रफल (है./ऐयर)
1.	करौली/हिण्डौन	हिण्डौन सिटी	3493/1 3497/1 3515/1	0.37, 0.18, 0.25
2.	करौली/हिण्डौन	हिण्डौन सिटी	10231/3484	0.31
3.	करौली/हिण्डौन	हिण्डौन सिटी	10230/3484, 10232/3502	0.31, 0.55

इसलिए इसके द्वारा समस्त संबंधित व्यक्तियों को सूचित किया जाता है कि यदि किसी व्यक्ति को राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम, 1956 की धारा 90-क और राजस्थान अभिधृति अधिनियम, 1955 की धारा 63 के अधीन पूर्वोक्त प्रयोजनों के लिए भूमि के उपयोग हेतु अनुज्ञा प्रदान करने और अभिधृति अधिकारों के निर्वापन पर कोई आक्षेप है तो इस नोटिस के प्रकाशन के 7 दिवस के भीतर-2 किसी कार्य दिवस पर कार्यालय समय के दौरान अधोहस्ताक्षरकर्ता के समक्ष समर्थक दस्तावेजों के साथ अपने आक्षेप प्रस्तुत कर सकेगा।

उपर्युक्त नियत समय के भीतर-2 किसी आक्षेप के अभाव में यह समझा जावेगा कि किसी को आक्षेप नहीं है और तद्नुसार मामले का निपटारा किया जायेगा।

यह सूचना मेरे हस्ताक्षर और मुहर के अधीन आज दिनांक 21.09.2023 को जारी की गई।

आयुक्त
नगर परिषद, हिण्डौन

विजेता खिलाड़ियों का मेडल पहनाकर सम्मान किया

हिण्डौन सिटी, (कासं)। 67 वी जिला स्तरीय माध्यमिक/ उच्च माध्यमिक विद्यालय खेल प्रतियोगिता 17 /19 छात्र वर्ग का समापन समारोह शुक्रवार को मंडावरा स्थित नमनदीप उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्रांगण में आयोजित हुआ। मीडिया प्रभारी नरेंद्र बाबा एवं संयोजक प्रधानाचार्य धर्मवीर बेनीवाल ने बताया कि कार्यक्रम के मुख्य अतिथि नमन दीप शिक्षा समिति के डायरेक्टर सुगर सिंह कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधानाचार्य कुम्हेर सिंह डागुर ने की। अध्यक्षता कर रहे कुम्हेर सिंह डागुर ने कहा की जिलों में भाग लेने वाला खिलाडी तनाव रहित रहता है। जिन खिलाडियों ने जीत हासिल की है वह जीत को बनाए रखने के लिए लगातार प्रेक्टिस करें। हारी हुई टीम निराशा न हो हार जीत खेल का हिस्सा है। खेलों से अनुशासन. सामाजिक समरसता बढती है मुख्य अतिथि सुगर सिंह ने कहा की पढाई के साथ-साथ हमें खेलों में भी रुचि दिखानी चाहिए बीमारियों को दूर करने के लिए आप घूमने जाते हैं। इसी तरह खेलने से भी लाभ मिलता है। कार्यक्रम में स्थानीय विद्यालय की छात्राओ द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। समापन समारोह के अवसर पर विजेता ,उपविजेता टीमों के खिलाड़ियों को गोल्ड मेडल व सिल्वर मेडल पहनाकर विजेता शील्ड प्रदान की गई। इससे पूर्व विद्यालय प्रधानाचार्य, धर्मवीर बेनीवाल, वेदवीर बेनीवाल , जगबीर सिंह, अजय वीर, शैलेंद्र शारीरिक शिक्षक दिगंबर सिंह बालकृष्ण वशिष्ठ ने अतिथियों को माल्यार्पण एवं साफा बंधन किया। कार्यक्रम का मंच संचालन शारीरिक शिक्षक ओमप्रकाश डागुर ने किया।

मैडल व शील्ड के साथ विजेता टीम के खिलाड़ी।

विजय गुप्ता उपाध्यक्ष बने

हलैना (निस) मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने केंद्रीय मंत्री स्व. राजेश पायलट के रहे निजी सचिव तथा कांग्रेस के वरिष्ठ नेता विजय गुप्ता को जीव-जंतु कल्याण बोर्ड का उपाध्यक्ष मनोनीत किया। जिन्होने उक्त पद की शपथ लेकर पदभार संभाल लिया और विजय गुप्ता ने पद की जिम्मेदारी लेते हुए जीव जंतुओं के कल्याण के कार्य और उनके संरक्षण आदि कार्य में जुट गए। जीव जंतु कल्याण बोर्ड का उपाध्यक्ष मनोनीत होने पर प्रदेश व जिला स्तरीय कांग्रेस कार्यकर्ता व समर्थको ने उनको दूरभाष पर बधाइयां दी। पदभार ग्रहण करने के बाद जीव जंतु कल्याण बोर्ड के उपाध्यक्ष विजय गुप्ता को सर्व प्रथम मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने बधाई दी, जिसके बाद कैबिनेट मंत्री भजनलाल जाटव, कैबिनेट मंत्री परसादी लाल मीणा, कैबिनेट मंत्री डॉ.बी.डी. कल्ला, कैबिनेट मंत्री विश्वेंद्र सिंह, राज्य मंत्री डॉ सुभाष गर्ग, कांग्रेस के जिलाध्यक्ष दिनेश सूपा, पूर्व जिलाध्यक्ष गिरीश चौधरी, गांव अलीपुर के सरपंच रामवीर गुर्जर, आदि ने गुप्ता को बधाइयां दी।

आम सूचना

मेरा पुत्र अखिलेश उर्फ ओमप्रकाश पुत्रवधु प्रीति मेरा व मेरी पत्नि का कहा नही मानते है। आये दिन घर में लड़ाई झगड़े पर आमदा रहते है हमको झुँठे मुकदमे में फसाने की धमकी देते है समझाने पर गाली गलौंच करते है इन दोनो की इन हरकतों से तंग व परेशान होकर मैने मेरे पुत्र अखिलेश उर्फ ओमप्रकाश व पुत्रवधु प्रीति को अपनी समस्त चल व अचल सम्पत्ति से बेदखल कर दिया है सूचित रहे।

भवदीय-विष्णु कुमार शर्मा पुत्र मोहन लाल शर्मा निवासी नई वस्ती सुकार त. बामनवास जिला गंगापुर सिटी।

मंत्री गर्ग ने वार्ड का लोकार्पण किया

भरतपुर, (निसं)। आरबीएम चिकित्सालय के पुराने ट्रोमा सेंटर के प्रथम तल पर बनाये गये प्री-फेब्रीकेटेड वार्ड का शुक्रवार को तकनीकी शिक्षा एवं आयुर्वेद राज्य मंत्री डॉ. सुभाष गर्ग ने लोकार्पण किया। इस वार्ड में 80 रोगियों को आधुनिक चिकित्सा सुविधा उपलब्ध हो सकेंगी। लोकार्पण के बाद डॉ. गर्ग ने वार्ड के अवलोकन के दौरान डॉ. गर्ग ने प्रमुख चिकित्सा अधिकारी डॉ. जिज्ञासा साहनी को निर्देश दिये कि वार्ड में रोगियों के लिये लगाये गये उपकरणों का रख-रखाव बेहतर तरीके से रखें और पर्याप्त संख्या में चिकित्साकर्मी तैनात करें ताकि रोगियों को किसी तरह की परेशानी का सामना नहीं करना पडे।

मां गुमानो बिजासनी देवी के पदयात्री रवाना

- 24 सितंबर को होगा मां का विशाल जागरण एवं भंडारा

गंगापुर सिटी, (निसं)। मां गुमानो बिजासनी देवी सेवा समिति (करणपुर वाली) गंगापुर सिटी के तत्वाधान में शुक्रवार को दोपहर 1 बजे पुरानी अनाज मंडी स्थित सीताराम जी मन्दिर से पूजा अर्चना के बाद गाजे-बाजे से गंगापुर सिटी से करणपुर के लिए पदयात्रा रवाना हुई। इसके बाद मां गुमानो बीजासणी देवी की प्रतिमा को फूलों से सजे धजे रथ में विराजित किया गया और गाजे-बाजे के साथ पदयात्री सीताराम जी के मंदिर व गणेश पाण्डाल की परिक्रमा करते हुए गंतव्य के लिए रवाना हुए। पदयात्रा में माता के भक्त भजनों पर नाचते-गाते हुए और जयकारे लगाते हुए चल रहे थे। समिति के प्रचार-प्रसार संयोजक गोपाल लाल सोनी व अध्यक्ष दिनेश धौलेटा ने बताया कि पदयात्रा 1 बजे पुरानी अनाज मंडी से रवाना हुई जो कि फब्बारा चौक, उदेई मोड, सालोदा मोड, गंगाजी की कोठी, सलेमपुर होते हुए पदयात्री प्रथम रात्रि विशाम कुडगांव के मैरिज गार्डन में करेंगे। माता के जयकारो से शहर का वातावरण धर्ममय हो गया। वहीं 23 सितम्बर को सुबह कैलादेवी में एवं रात्री विश्राम राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय लकरूकी रहेगा। मुख्य यात्रा संयोजक महेश शर्मा पत्रकार ने बताया कि 24 को पदयात्रा का सुबह ठाकूर बाबा पर व दोपहर में मां जगदम्बे के दरवार में गाजे बाजे एवं शोभायात्रा के साथ पहुंचेगी जहां रात्री को माताराणी के प्रांगण में विशाल जागरण, छप्पन भोग, फूल बंगला झांकी व भण्डारे का आयोजन किया जायेगा। इससे पहले थाना करणपुर से माता रानी के मंदिर तक डीजे, रथ आदि के साथ विशाल शोभायात्रा का आयोजन किया जायेगा जिसके बाद मां गुमाने बीजासणी यात्री निवास गंगापुर वालो की धर्मशाला में विशाल भण्डारे का आयोजन किया जायेगा। रात्री में विशाल जागरण होगा। समिति अध्यक्ष दिनेश धोलेटा, मुख्य यात्रा संयोजक महेश शर्मा पत्रकार, कोषाध्यक्ष श्याम रोधेई, दिनेश चूडी, ओमप्रकाश गुप्ता, सतीश जोशी, मुकेश लाइट, रमेश सेन, गोविंद मिल्की, संतोष शर्मा, डॉ मुकेश गुप्ता, भगवान सहाय, ओमप्रकाश एसबीआई, हरिचरण गुप्ता, ताराचंद गुप्ता, घनश्याम शर्मा, मुकेश भैरव, विष्णु करणपुर, ब्रह्मा सलेमपुर, धर्मेंद्र मुद्गल, पप्पू गुरु सहित काफी संख्या में माता रानी के भक्त मोजूद थे।

कार्यालय प्रधानाचार्य देवनारायण राजकीय बालक आवासीय विद्यालय गुडला (करौली)

क्रमांक: 2023/616 दिनांक: 22.09.2023

खुली निविदा सूचना

आवासीय विद्यालय देवनारायण राजकीय बालक आवासीय विद्यालयों जिला करौली में 280 विद्यार्थियों की क्षमता के आवासीय विद्यालयों में चपाती मेकिंग मशीन स्मार्ट इन्टरएक्टिव टीचिंग बोर्ड एवं स्टूल टेबल आदि की आवश्यकता के लिए निविदा आमंत्रित की जाती है।

क्र. सं.	विवरण	अनु. राशि लाखों में	निविदा शुल्क (रू.)	प्रतिभूति राशि (रू.)	निविदा फॉर्म उपलब्ध दिनांक	निविदा फॉर्म जमा दिनांक	निविदा खोलने का समय	UBN
1	चपाती मेकिंग मशीन	6.00 per machine	500	12000	22.09.2023	निविदा खुलने की दिनांक से एक दिन पूर्व तक	29.09.2023 दोपहर 2.00 बजे	SOC2324GSOB00163 SOC2324GSOB00165
2	स्मार्ट इन्टरएक्टिव टीचिंग बोर्ड	7.00	500	14000			29.09.2023 दोपहर 2.00 बजे	SOC2324GSOB00164 SOC2324GSOB00166
3	स्टूल टेबल	5.18	500	10360			29.09.2023 दोपहर 2.00 बजे	SOC2324GSOB00167

निविदा की विस्तृत शर्तें राज्य सरकार के SPPP पोर्टल पर देखी जा सकती है।

(शिवचरण पोषवास)
प्रधानाचार्य

कार्यालय नगर निगम, भरतपुर
सार्वजनिक सूचना

क्रमांक : न.नि.घ./स्कीम/2023-24/10358-359 दिनांक : 21.09.2023

S.T.C. हाउसिंग बोर्ड योजना भरतपुर में आवासीय भूखण्ड संख्या 1-G-21 श्री प्रदीप पंवार पुत्र श्री ए०वी० पंवार निवासी - भरतपुर के नाम 99 वर्षीय लीज होल्ड पर आवासीय भूखण्ड आवंटन/नीलामी में आवासन मण्डल, भरतपुर द्वारा विक्रय किया गया था। जिसका क्षेत्रफल59.06 वर्गमीटर है। उक्त भूखण्ड की लीजडीड राजस्थान आवासन मण्डल, भरतपुर के पत्रांक 521 दिनांक 26.06.1997 के द्वारा श्री प्रदीप पंवार पुत्र श्री ए०वी० पंवार निवासी - भरतपुर के नाम पूर्व में जारी की जा चुकी है। श्री प्रदीप पंवार पुत्र श्री ए०वी० पंवार ने उक्त भूखण्ड की विक्रय एन०ओ०सी० जारी कराने हेतु आवेदन पत्र इस कार्यालय में प्रस्तुत किया है। उक्त भूखण्ड की विक्रय एन०ओ०सी० जारी करने की कार्यवाही इस कार्यालय द्वारा की जानी है।

इस सम्बन्ध में यदि किसी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो अन्दर अवधि सात दिवस में कार्यालय नगर निगम, भरतपुर में अपनी आपत्ति दर्ज करावें अन्यथा गुजरने म्याद आवासीय भूखण्ड संख्या 1-G-21, S.T.C., हाउसिंग बोर्ड, भरतपुर की विक्रय एन०ओ०सी० जारी करने की कार्यवाही कर दी जावेगी एवं कोई आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी।

प्रभारी अधिकारी, स्कीम शाखा, नगर निगम, भरतपुर

राजस्थान सरकार

कार्यालय अधीक्षक, राजकीय सम्प्रेक्षण एवं किशोर गृह,करौली

क्रमांक:-निविदा/335 खुली निविदा सूचना 2023-24 दिनांक:-22.09.2023

कार्यालय अधीक्षक, राजकीय सम्प्रेक्षण एवं किशोर गृह, करौली एवं अधीक्षक राजकीय विशेषज्ञ दत्तक ग्रहण एजेन्सी में जॉब बेस/विजिटिंग आधार पर कार्य हेतु पंजीकृत संस्थाओं, सेवा प्रदाताओं से मूहरबंद निविदाऐं आमंत्रित की जाती है।

क्र. स.	पद का विवरण / संख्या	अनुमानित लागत रूपये लाखों में	धरोहर राशि	निविदा शुल्क	कार्य अवधि	निविदा पत्र डाउनलॉड करने की तिथि	निविदा पत्र जमा की अन्तिम तिथि	तकनीकी/वित्तीय निविदा खोलने की तिथि
1	राजकीय सम्प्रेक्षण एवं किशोर गृह करौली हेतु काउन्सलर, रसोईयों, कम्प्यूटर ऑपरेटर, केयर टेकर एवं स्वीपर UBN No- **CED2324SSOB00045**	8.00 लाख	निर्धारित प्रारूप में 50/- के स्टाम्प पर घोषणा पत्र	200 रूपये	01.10.2023 से 31.03.2023 (वित्तीय वर्ष 2023-24)	22.09.2023 से 29.09.2023 प्रातः 10 बजे तक	29.09.2023 प्रातः 11 बजे तक	29.09.2023 को दोपहर 12 बजे
2	राजकीय विशेषज्ञ दत्तक ग्रहण ऐजेंसी (शिशु गृह) करौली हेतु प्रबन्धक, सामाजिक कार्यकर्ता, नर्स, आया एवं चौकीदार UBN No- **CED2324SSOB00044**	9.00 लाख		200 रूपये				

उक्त निविदा राजस्थान लोक उपापन में पारदर्शिता नियम 2013 के तहत जारी की जाकर राजकीय वेबसाईट www.sppp.raj.nic.in पर देखी जा सकती है। निविदा की अन्य शर्ते कार्यालय में देखी जा सकती है।

(आशीष बंसल)
अधीक्षक
राजकीय सम्प्रेक्षण एवं किशोर गृह,
करौली

ई.वी.एम. के सोर्स सॉफ्टवेयर की जांच की मांग वाली याचिका खारिज

सुप्रीम कोर्ट ने याचिका खारिज करते हुए कहा कि, सॉफ्टवेयर के सोर्स कोड को सार्वजनिक नहीं किया जा सकता, क्योंकि इससे ई.वी.एम. के हैक होने का खतरा बढ़ जाएगा

नई दिल्ली, 22 सितंबर (वार्ता)। सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव के दौरान इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनों (ई.वी.एम.) में इस्तेमाल किए गए सोर्स कोड के ऑडिट की मांग वाली एक जनहित याचिका शुक्रवार को खारिज कर दी।

न्यायाधीश डी.वाई. चंद्रचूड़ और न्यायमूर्ति जे.बी. पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ ने सुनील अह्या की याचिका खारिज करते हुए कहा कि सॉफ्टवेयर के स्रोत कोड को सार्वजनिक नहीं किया जा सकता, क्योंकि इससे ई.वी.एम. के हैक (ई.वी.एम. के किसी अन्य के नियंत्रण में हो जाने) होने का खतरा बढ़ जाएगा।

बैंच ने कहा, हम ऐसे नीतिगत मुद्दे पर याचिकाकर्ता द्वारा मांगे गए निर्देश जारी करने के इच्छुक नहीं हैं। इस अदालत के समक्ष यह संकेत देने के लिए कोई तथ्य नहीं है कि चुनाव आयोग अपने आदेश को पूरा करने के लिए उचित कदम नहीं उठा रहा है।"

■ **सुप्रीम कोर्ट ने कहा, "हम देश के ऐसे नीतिगत मुद्दे पर छेड़छाड़ करने के इच्छुक नहीं हैं। इस अदालत के समक्ष यह संकेत देने के लिए कोई तथ्य नहीं है कि, चुनाव आयोग ई.वी.एम. की सुरक्षा व्यवस्था को पूरा करने के लिए उचित कदम नहीं उठा रहा है।"**

याचिकाकर्ता ने कहा कि यह सिर्फ ई.वी.एम.के सोर्स कोड के ऑडिट से संबंधित याचिका है। पीठ ने याचिकाकर्ता से सवाल पूछा कि इस पर संदेह करने के लिए क्या तथ्य है?

इस पर सुनील ने कहा कि चुनाव आयोग ने किसी विशेष मानक का पालन नहीं किया है। उसने किसी भी मानक का खुलासा नहीं किया है। कोई भी ऑडिट मान्यता प्राप्त मानक के अनुसार होना चाहिए।

उन्होंने दलील दी कि स्रोत ई.वी.एम. का दिमाग है और यह मामला लोकतंत्र के अस्तित्व से जुड़ा है। पीठ ने कहा कि उसे पता है कि सोर्स कोड क्या होता है, क्योंकि जब कोई आवेदन शीर्ष अदालत की वेबसाइट पर डाला जाता है तो उसे सुरक्षा ऑडिट से गुजरना पड़ता है।

जनहित याचिका में एक विशेष मानक आई.ई.ई.ई. 1028 को लागू करते हुए ई.वी.एम. के स्रोत कोड के स्वतंत्र ऑडिट की मांग की गई है। साथ ही मांग की कि स्रोत का स्वतंत्र रूप से ऑडिट किया जाना चाहिए और ऑडिट रिपोर्ट को सार्वजनिक किया जाना चाहिए। पीठ ने कहा कि याचिका 2019 के आम चुनाव से पहले और फिर अप्रैल 2019 में दायर की गई थी।

शीर्ष अदालत ने तब कहा था कि वह आम चुनाव की पृष्ठभूमि के खिलाफ जनहित याचिका में उठाए गए मुद्दों पर विचार नहीं कर सकती है। अदालत ने याचिकाकर्ता को स्वतंत्रता दी गई थी कि वह नये सिरे से आवेदन करें।

इसके बाद सुनील ने 2020 में शीर्ष अदालत के समक्ष एक और जनहित याचिका दायर की थी। इसके बाद उन्हें चुनाव आयोग के समक्ष प्रतिनिधित्व करने की अनुमति दी गई।

याचिकाकर्ता ने शीर्ष अदालत से कहा कि चूंकि चुनाव आयोग ने उनके तीन अभ्यावेदनों का जवाब नहीं दिया, इसलिए उन्हें फिर से अदालत का दरवाजा खटखटाने के लिए मजबूर होना पड़ा।

चंद्रबाबू नायडू को हाईकोर्ट से भी निराशा

विजयवाड़ा 22 सितंबर (वार्ता) आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय ने कौशल विकास घोटाला मामले को रद्द करने को लेकर तेलुगू देशम पार्टी (तेदेपा) प्रमुख एवं पूर्व मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू की याचिका शुक्रवार को रद्द कर दी।

न्यायमूर्ति के. श्रीनिवास रेड्डी ने नायडू की याचिका यह कहते हुए खारिज कर दी कि न्यायालय इस मामले में हस्तक्षेप नहीं करेगा। न्यायालय ने इस मामले में नायडू तथा अपराध जांच विभाग के वकीलों की दलीलों को सुनने के बाद अपना फैसला सुनाया।

इस बीच ए.सी.बी. अदालत ने जेल में बंद नायडू को दो दिन के लिए पुलिस हिरासत में भेज दिया है। सी.आई.डी. ने हालांकि अदालत से नायडू को पांच दिन के लिए हिरासत में भेजने की गुहार लगायी थी। अब सी.आई.डी. के अधिकारी उनसे दो दिनों तक इस मामले में पूछताछ करेंगे। ए.सी.बी. अदालत ने सी.आई.डी. के अधिकारियों को नायडू से राजमुंदरी केंद्रीय कारावास में ही सवाल-जवाब करने को कहा है।

ए.सी.बी. अदालत ने सी.आई.डी. अधिकारियों को नायडू के वकीलों की मौजूदगी में सुबह साढ़े नौ बजे से शाम पांच बजे तक पूछताछ करने का निर्देश दिया। साथ की पूछताछ के बाद आभासी माध्यम में नायडू को अदालत में पेश करने का निर्देश भी दिया।

चंबल नदी में नहाने गए 6 युवक तेज बहाव में बहे, 3 को बचाया, 3 लापता

देर शाम तक चला रेस्क्यू ऑपरेशन, कल फिर से चलेगा

■ **बरसात होने और कोटा बैराज से पानी छोड़े जाने से नदी में पानी का बहाव बहुत ज्यादा है।**

■ **पुलिस टीम और चंबल सफारी के कर्मचारियों की सूझबूझ से तीन युवकों की जान बचाई गई।**

धौलपुर, 22 सितम्बर (निसं)। धौलपुर शहर से गुजर रही चंबल नदी में शुक्रवार सुबह अपने परिजनों के साथ नहाने गये 6 युवक नदी के तेज बहाव में बह गये। जिनमें से 3 को बचा लिया गया, जबकि 3 अभी तक लापता है।

लापता युवकों को खोजने के लिए दिनभर पुलिस और सिविल डिफेंस की टीम और गोताखोरों ने रेस्क्यू ऑपरेशन चलाया। लेकिन शाम तक कोई पता नहीं चल सका। वहीं शाम को अंधेरा होने पर रेस्क्यू ऑपरेशन बंद कर दिया गया। जो शनिवार सुबह फिर से शुरू किया जाएगा। वहीं इस दौरान नदी में बहे युवकों के परिजनों का इस शोक के कारण रो-रोकर बुरा हाल था।

आपको बता दें कि बरसात होने और गत दिनों कोटा बैराज से पानी छोड़े जाने के बाद चंबल नदी में इस समय अधिक पानी आ गया है और नदी का बहाव सामान्य से काफी अधिक है। जिस कारण नहाते समय युवक पानी का तेज बहाव होने के कारण नदी में बह गए। जानकारी के मुताबिक गुरुवार को धौलपुर में पहाड़ वाले बाबा का मेला लगा था। जिसे देखने के लिए मुरैना, ग्वालियर और बाड़ी के युवक अपने परिजनों के साथ पुराना शहर धौलपुर में अपनी रिश्तेदारी में आए थे। जहां सभी ने रात को पहाड़ पर कव्वाली सुनी। इसके बाद शुक्रवार सुबह सभी लोग परिवार सहित चंबल नदी पर नहाने चले गए। जहां पानी का बहाव तेज होने के कारण 6 युवक पानी में बह गए। जिनमें से तीन जनों ने धौलपुर भरतपुर पेयजल योजना के नीचे लटकी बिजली की केबल पकड़ ली। जिन्हें चंबल चैक पोस्ट के पुलिसकर्मियों के साथ चंबल सफारी के स्टाफ ने रेस्क्यू कर सुरक्षित बाहर निकाल लिया। जबकि तीन जने नदी में बह गए। हादसे की सूचना मिलते ही एडिशनल एसपी ओमप्रकाश मीणा, सीओ सिटी सुरेश सांखला और कोतवाल रामकिशन यादव के नेतृत्व में पुलिस कर्मी मौके पर पहुंचे। जिन्होंने नदी में तीनों युवकों के लिए सर्च ऑपरेशन चलाया।

कोतवाल रामकिशन यादव ने बताया कि, रेस्क्यू ऑपरेशन के दौरान शहजाद निवासी ग्वालियर, गोलू निवासी धौलपुर और इरशाद निवासी मुरैना को सकुशल बाहर निकाल लिया गया। जबकि नदी के तेज बहाव में मुबारक (19) पुत्र अली निवासी ग्वालियर, लकी (16) पुत्र निसार निवासी पुराना शहर धौलपुर और सूफियाना पुत्र समीर निवासी बाड़ी बह गए हैं। जिनकी तलाश के लिए शाम तक रेस्क्यू ऑपरेशन चलाया गया। लेकिन कोई पता नहीं चल सका। अंधेरा होने पर रेस्क्यू ऑपरेशन बंद कर दिया गया। शनिवार सुबह फिर से ऑपरेशन चलाकर तलाश की जाएगी।

दिल्ली में दिवाली पर पटाखों पर पूर्णतः प्रतिबंध रहेगा

नई दिल्ली, 22 सितंबर (वार्ता)। उच्चतम न्यायालय ने राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में प्रदूषण के स्तर के मद्देनजर शुक्रवार को राजधानी में कम प्रदूषण वाले पटाखों (ग्रीन पटाखे) सहित सभी पटाखों पर प्रतिबंध लगा दिया।

न्यायमूर्ति ए.एस. बोपन्ना की अध्यक्षता वाली पीठ ने इस मामले में फायरक्रैकर एसोसिएशन द्वारा दायर आवेदन को खारिज करते हुए कहा कि वह राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (दिल्ली-एन.सी.आर.) में पटाखों के निर्माण और उपयोग की अनुमति नहीं दे सकती।

शीर्ष अदालत ने राजधानी में पटाखे पर पूर्ण प्रतिबंध लागू करने में दिल्ली पुलिस की विफलता पर भी सवाल उठाया था। एसोसिएशन ने अपनी याचिका में ग्रीन पटाखों में बेहतर बदलाव के साथ बेरियम नामक रसायन को शामिल कर पटाखे की अनुमति देने की गुहार लगाई थी। शीर्ष अदालत ने यह भी स्पष्ट किया कि जिन राज्यों में पटाखों पर पूरी तरह से प्रतिबंध नहीं है, वहां लोग निर्धारित नियमों के अनुसार अपेक्षाकृत ग्रीन पटाखों का इस्तेमाल कर सकते हैं। अदालत का यह आदेश दीपावली के दौरान प्रदूषण के स्तर और अस्थमा एवं अन्य मरीजों की बढ़ती संख्या को देखते हुए बेहद खास है।

महाराष्ट्र में छः माह में 1555 किसानों ने आत्महत्या की

■ **मराठवाड़ा में सूखे के कारण किसानों की आर्थिक स्थिति और विकट हो गई है, पश्चिमी विदर्भ के अमरावती संभाग में सबसे अधिक 637 किसानों ने खुदकुशी की है।**

नागपुर, 22 सितंबर (वार्ता)। महाराष्ट्र विधानसभा में विपक्ष के नेता विजय वाडेत्तीवार ने कहा है कि महाराष्ट्र में गत जनवरी से जुलाई 2023 तक करीब 1,555 किसानों ने आत्महत्या की है, जिनमें नागरपुर संभाग के 144 किसान शामिल हैं।

वाडेत्तीवार ने यहां संवाददाताओं से कहा कि मराठवाड़ा में सूखा इस चिंता को और बढ़ा रहा है। पश्चिमी विदर्भ के अमरावती संभाग में सबसे अधिक 637 किसानों ने खुदकुशी की है। वहीं मराठवाड़ा के औरंगाबाद संभाग में 584 किसानों ने अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली, जबकि उत्तरी मराठवाड़ा के नासिक संभाग में 174 किसानों ने आत्महत्या की है। पूर्वी विदर्भ के नागपुर संभाग में 144 किसानों ने इस तरह का कठोर कदम उठाया, जबकि पश्चिमी मराठवाड़ा के पुणे संभाग में 16 किसानों ने आत्महत्या की है।

उन्होंने कहा कि इस साल मराठवाड़ा में 50 फीसदी कम बारिश हुयी। इसी तरह से औरंगाबाद, जलना तथा उस्मानाबाद में क्रमशः 27 फीसद, 43 प्रतिशत तथा 32 फीसदी कम बारिश हुयी है, जबकि बीड तथा परभणी में क्रमशः 43 तथा 31 प्रतिशत कम बारिश हुयी है।

पूर्व मंत्री ने इस संकट की ओर ध्यान नहीं देने को लेकर राज्य सरकार की आलोचना की।

उन्होंने कहा कि बारिश की कमी के कारण समस्याएं लगातार बढ़ती जा रही हैं और सरकार ने अभी तक स्थिति से निपटने के लिए किसी उपाय की घोषणा नहीं की है।

महिला नेताओं ने...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

हैं। जहाँ 2024 के चुनावों के लिये जातिगत जनगणना एवं ओ.बी.सी. के मुद्दे का अभियान छेड़ने के लिये, इंडिया गठबंधन को जबरदस्त मौका मिल गया है, वहीं इस मामले में कुछ परेशनियाँ भी हैं। एक- विपक्षी गठबंधन के सभी घटक दल इस मामले में एकमत नहीं है। मुम्बई में हुई इंडिया ब्लॉक की पिछली मीटिंग में, टी.एम.सी. प्रमुख ममता बनर्जी इस रणनीति से असहमत बताई गई हैं कि जातिगत जनगणना को 2024 के चुनावों के लिये बड़ा मुद्दा बनाया जाये। जहाँ राहुल गांधी ने इस संबंध में नई दिशा पकड़ी है, वहीं कांग्रेस के अन्दर के कुछ वर्ग यह महसूस करते बताये जाते हैं कि जातिगत जनगणना को 2024 में प्रचार का बड़ा मुद्दा बनाया जाना नुकसानदेह रहेगा।

चार लोकसभा ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

और गाज़ीपुर के लिए उपचुनाव नहीं करवाए जाएंगे क्योंकि 2024 के आम चुनावों की तैयारी शुरु हो चुकी है और नए सांसदों के पास एक साल का समय भी नहीं होगा। ये सीटें मार्च और मई 2023 में रिक्त हुईं थीं। पहली तीन सीटें वहां के सांसदों की मृत्यु होने के कारण तथा गाज़ीपुर सीट वहां के सांसद अफ़ज़ल अंसारी को एक मई को कोर्ट द्वारा दोषी ठहराए जाने के बाद अयोग्य ठहराए जाने के कारण हुई थी।

चीन ने एशियन गेम्स में अरुणाचल के 3 खिलाड़ियों को भाग लेने से रोका

भारत ने चीन के इस कदम पर कड़ी आपत्ति जताई और विरोधस्वरूप केन्द्रीय खेल मंत्री अनुराग ठाकुर ने अपनी पूर्व निर्धारित चीन यात्रा रद्द की

नई दिल्ली, 22 सितंबर (वार्ता)। चीन ने एशियन गेम्स में शामिल होने चीन पहुँचे अरुणाचल प्रदेश के तीन खिलाड़ियों को प्रवेश नहीं दिया है। भारत ने चीन द्वारा उसके कुछ खिलाड़ियों को 19वें एशियाई खेलों में प्रवेश से वंचित किए जाने पर शुक्रवार को कड़ी आपत्ति व्यक्त की और केंद्रीय खेल एवं युवा कार्य मंत्री अनुराग ठाकुर की चीन यात्रा को रद्द कर दी गई है। विदेश मंत्रालय के आधिकारिक प्रवक्ता अरिंदम बागची ने आज यहां कुछ भारतीय खिलाड़ियों को 19वें एशियाई खेलों में प्रवेश से वंचित किए जाने पर मीडिया के सवालों के जवाब में कहा भारत सरकार को पता चला है कि चीन के अधिकारियों ने निशाना बनाते हुए और पूर्व-निर्धारित तरीके से अरुणाचल प्रदेश के कुछ भारतीय खिलाड़ियों को चीन के हांगझू में होने वाले 19वें एशियाई खेलों में मान्यता और प्रवेश से वंचित करके उनके साथ भेदभाव किया है।

■ **भारतीय विदेश मंत्रालय ने इस मामले में चीन के समक्ष कड़ा विरोध प्रकट किया है। विदेश मंत्रालय ने कहा कि, चीन ने खिलाड़ियों के साथ भेदभाव करके खेल भावना का अपमान किया है।**

बागची ने कहा,हमारी लंबे समय से चली आ रही और सुसंगत स्थिति के अनुरूप, भारत, दृढ़ता से भारतीय नागरिकों के साथ उनके निवास स्थान एवं जातीयता के आधार पर भेदभावपूर्ण व्यवहार को अस्वीकार करता है। अरुणाचल प्रदेश भारत का अभिन्न और अविभाज्य अंग है और रहेगा।

उन्होंने कहा, भारत सरकार ने चीन द्वारा हमारे कुछ खिलाड़ियों को जानबूझकर और निशाना बनाने को लेकर चीन के समक्ष कड़ा विरोध दर्ज कराया है। चीन का यह कदम एशियाई खेलों की भावना और उनके आचरण को नियंत्रित करने वाले नियमों दोनों का उल्लंघन है और स्पष्ट रूप से सदस्य देशों के प्रतिस्पर्धियों के प्रति भेदभाव को प्रदर्शित करता है।प्रवक्ता ने कहा कि चीन के इस कदम के विरोध स्वरूप खेल मंत्री ने अपनी निर्धारित चीन यात्रा रद्द कर दी है। उन्होंने कहा कि भारत सरकार को अपने हितों की रक्षा के लिए उचित कदम उठाने का अधिकार है।

उल्लेखनीय है कि चीन ने भारत के अरुणाचल प्रदेश की रहने वालीं तीन प्रमुख महिला वुशू खिलाड़ियो न्येमान वांग्सू, ओनिल तेगा और मेपुंग लाम्पु को हांगझाउ में होने वाले एशियाई खेलों में अपने यहां आने की इजाज़त नहीं दी।

महिला आरक्षण ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए राहुल ने कहा, "सच यह है कि महिलाओं को लोकसभा और विधानसभाओं में 33 प्रतिशत आरक्षण आज ही दिया जा सकता है। यह कोई जटिल मामला नहीं है।"

लोकसभा में अपने इस वक्तव्य पर जोर देते हुए कि भारत सरकार चलाने वाले 90 सचिवों में से केवल 3 ओ.बी.सी. के हैं, राहुल ने कहा, "मुझे समझ में नहीं आता कि प्रधानमंत्री मोदी रोज ओ.बी.सी. की बात करते हैं लेकिन उनके लिए किया क्या है।"

गांधी ने कहा कि जनगणना और परिसीमन महिलाओं का कोटा टालने के लचर बहाने हैं और यह सारी कवायद केवल एक चुनावी मुद्दा बनाने के लिए है, वास्तव में इसे लागू किए बिना।

राहुल ने कहा कि लोकसभा और विधानसभाओं में एक तिहाई सीटें महिलाओं को देने के विधेयक को लोकसभा ने बुधवार को और राज्यसभा ने गुरूवार को पारित कर दिया लेकिन इसकी क्रियान्विति की कोई तारीख तय नहीं की।

कांग्रेस के सूत्रों ने कहा कि ओ.बी.सी. भारत की जनसंख्या का 60 प्रतिशत है और प्रधानमंत्री ने उनके लिए आरक्षण को टालते हुए विधेयक जल्दी पारित करवाया क्योंकि उन्हें चिंता है कि इंडिया गठबंधन अगले चुनावों में भाजपा सरकार को हराने के लिए जातीय जनगणना के लिए दबाव डाल रहा है।

मथुरा की शाही ईदगाह मस्जिद के सर्वे की मांग वाली याचिका सुप्रीम कोर्ट ने खारिज की

■ **कृष्ण जन्मभूमि मुक्ति निर्माण ट्रस्ट की याचिका पर मस्जिद की प्रबंधन समिति और उत्तर प्रदेश सुन्नी सैन्ट्रल वक्फ बोर्ड ने इस मुकदमे पर आपत्ति जताई थी।**

■ **याचिका में दावा किया गया था कि, मथुरा में कृष्ण जन्मभूमि परिसर में निर्मित शाही मस्जिद अवैध तरीके से स्थापित की गई है। याचिका में यह भी कहा गया था कि, अगर सर्वे हुआ तो शाही मस्जिद परिसर में मथुरा के कृष्ण मंदिर के कई प्रतीक इत्यादि प्राप्त हो सकते हैं।**

नई दिल्ली, 22 सितंबर (वार्ता)। सुप्रीम कोर्ट ने उत्तर प्रदेश के मथुरा के कृष्ण जन्मभूमि-शाही ईदगाह परिसर का वैज्ञानिक सर्वेक्षण के लिए निर्देश जारी करने की मांग वाली एक याचिका शुक्रवार को खारिज कर दी।

न्यायमूर्ति संजय किशन कौल और न्यायमूर्ति सुधांशु धूलिया की पीठ ने कृष्ण जन्मभूमि मुक्ति निर्माण ट्रस्ट की याचिका यह कहते हुए खारिज कर दी कि इलाहाबाद उच्च न्यायालय के समक्ष इस मामले में सिविल प्रक्रिया संहिता के आदेश 26 नियम 11 के तहत आवेदन पर फैसला लंबित है, जो आयुक्तों की नियुक्ति से जुड़ा है।

उच्च न्यायालय के मथुरा के विवादित स्थल का वैज्ञानिक सर्वेक्षण के लिए निर्देश जारी करने से इनकार करने के फैसले को ट्रस्ट ने शीर्ष अदालत में चुनौती दी थी।

शीर्ष अदालत की पीठ ने कहा कि यह दलील नहीं दी जा सकती है कि निचली अदालत के पास आदेश पारित करने का अधिकार क्षेत्र नहीं था और यह भी आग्रह नहीं किया जा सकता है कि स्थानांतरण के बाद अकेले उच्च न्यायालय को पुनरीक्षण क्षेत्राधिकार का प्रयोग करना चाहिए था।

पीठ ने याचिकाकर्ता के वकील से कहा कि उच्च न्यायालय इस मामले की योग्यता (सुनवाई करने योग्य है या नहीं) समेत अन्य पहलुओं पर विचार कर रहा है, लिहाजा याचिकाकर्ता को वहां जाना चाहिए।

न्यायमूर्ति कौल ने याचिकाकर्ता का पक्ष रख रहे वरिष्ठ अधिवक्ता गौरव भाटिया से पूछा, "आप एकल पीठ के अंतरिम आदेश के खिलाफ यहां क्यों आए हैं।"

इस पर भाटिया ने कहा कि जब मुकदमा उच्च न्यायालय में स्थानांतरित किया गया था, तो निचली अदालत को उक्त आदेश पारित नहीं करना चाहिए था।इस पर पीठ ने याचिकाकर्ता के वकील से कहा कि निचली अदालत ने अपने अधिकार क्षेत्र के तहत आदेश पारित किया। उच्च न्यायालय ने इस साल जुलाई में कृष्ण जन्मभूमि मुक्ति निर्माण ट्रस्ट द्वारा दायर एक याचिका को खारिज कर दिया था।

लोकसभा ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सिंह ने आश्चर्य जताया कि क्या बिधूड़ी की भाषा आर.एस.एस. में सिखाए गए मूल्यों के कारण है।

आप ने भाजपा सांसद हर्षवर्धन और रविशंकर प्रसाद को भी लताड़ा जो उस समय हंस रहे थे जब बिधूड़ी दानिश को गालियां दे रहे थे।

एन.सी.पी. के प्रवक्ता क्लाइड क्रास्टो ने एक्स पर कहा, "इस असभ्य और संस्कारहीन बयान के लिए भाजपा सांसद रमेश बिधूड़ी को निलंबित क्यों नहीं किया गया? अध्यक्ष ओम बिड़ला जी को तुरंत कार्रवाई करनी चाहिए। भाजपा को उन्हें निलंबित करना चाहिए लेकिन वह उन्हें पदोन्नति देगी।

संसद का ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सफलता पर लम्बी चर्चा के बाद, 21 सितम्बर की रात को लोकसभा अनिश्चित काल के लिये स्थगित कर दी गई।

कर्नाटक में कुछ वरिष्ठ कांग्रेसी नेता तीन...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

उन्होंने मीडिया कर्मियों से कहा कि उन्होंने इस बारे में हाईकमान से निवेदन किया है। मंत्री ने कहा, "अगर उन्हें यह (सुझाव) ठीक लगता है तो वे इसे क्रियान्वित करेंगे। अगर वे इसे सही नहीं मानते हैं तो वे इसकी उपेक्षा कर देंगे।"

यहाँ यह स्मरण दिलाना उचित होगा कि और ज्यादा उपमुख्यमंत्री बनाने की कोशिश ऐसी चीज होगी जो कांग्रेस के लिये खतरे से भरी हुई होगी क्योंकि यह बात सरकार के गठन के समय ही बिल्कुल स्पष्ट कर दी गई थी कि उपमुख्यमंत्री केवल एक ही होगा तथा इस पद पर डी.के. शिवकुमार होंगे। वस्तुतः दो प्रतिद्वंदियों सिद्धारमैया तथा शिव कुमार के परस्पर टकराने वाली दावेदारी के कारण ही, कांग्रेस सरकार के बनने में कुछ विलम्ब भी हुआ था। अंत में, समझौते के लिये यह फॉर्मूला तय किया गया कि शिवकुमार को उपमुख्यमंत्री पद तथा अपनी पसंद का मंत्रालय मिल सकता है तथा इसके साथ ही, उनके समर्थकों को एक निश्चित संख्या में मंत्रालय भी दिये जा सकते हैं।

इस समय पार्टी के अंदर और बाहर इस प्रकार की अटकलें लगाई जा रही हैं कि तीन उपमुख्यमंत्रियों की माँग को मुख्यमंत्री के नज़दीकी लोगों द्वारा शिवकुमार को तंग करने तथा उन्हें उकसाने एवं उत्तेजित करने के लिये हवा दी जा रही है। राजन्ना, जो मुख्यमंत्री के नज़दीक माने जाते हैं, ने ऐसी अटकलों को बकवास बताया है तथा कहा है कि ऐसी अटकलें गलत है। राजन्न ने तीन उपमुख्यमंत्रियों का सुझाव देते हुये कहा था कि लिंगायत, एस.सी./एस.टी. तथा अल्पसंख्यक समुदाय का एक-एक उपमुख्यमंत्री होना चाहिये। उनके अनुसार, तीन उपमुख्यमंत्री होने से कांग्रेस को इन समुदायों का और ज्यादा समर्थन मिलेगा तथा इससे लोकसभा चुनावों में कांग्रेस को मदद मिलेगी।

उन्होंने कहा, "आगामी लोकसभा चुनाव कर्नाटक तथा हमारी पार्टी के लिये अत्यधिक महत्वपूर्ण होंगे। ज्यादा सीटें जीतना बहुत मुश्किल तथा महत्वपूर्ण होगा तथा (इसलिये) मैंने तीन अतिरिक्त उपमुख्यमंत्रियों का प्रस्ताव पार्टी के हित में ही रखा है।"

उनके इस सुझाव तथा बयानों से सत्तारूढ़ पार्टी के अन्दर एक विवाद एवं तनाव पैदा हो गया है। लेकिन शिवकुमार ने सहकारिता मंत्री की टिप्पणी पर कोई प्रतिक्रिया नहीं देना उचित समझा है। लेकिन पार्टी प्रवक्ता प्रियांक खड़गे ने कहा है कि नेतागण अपनी राय व्यक्त करने के लिये स्वतंत्र हैं। प्रियांक खड़गे ने कहा, "लोग अपनी व्यक्तिगत राय हाईकमान के सामने व्यक्त कर सकते हैं लेकिन, जहाँ तक मैं समझती हूँ, हाईकमान की ऐसी कोई योजना (तीन उपमुख्यमंत्री नियुक्त करने की) नहीं है। इस प्रकार के प्रस्ताव से हमारी पार्टी में कोई समस्या पैदा नहीं होगी। हमारी पार्टी में आंतरिक लोकतंत्र है। किसी भी परिवार में मतों की भिन्नता सामान्य बात है।"

खड़गे-राहुल की सभा...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

फोटो नज़र आ रहे हैं।

ज्ञातव्य है कि, कांग्रेस आलाकमान बार-बार राजस्थान में एकजुटता की बात करता है, लेकिन चुनाव से पहले कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और कांग्रेस सांसद राहुल गांधी की जो सभा होने जा रही है उसके होर्डिंग्स में सचिन पायलट को जगह नहीं मिलना बता रहा है कि कांग्रेस में एकजुटता की बातें बेमानी साबित हो रही हैं।

दूसरी ओर इस सभा में भीड़ के लिए कांग्रेस के 52 हजार से ज्यादा बूथ अध्यक्षों, 2200 मंडल अध्यक्षों, 400 ब्लॉक अध्यक्षों, 40 जिलाध्यक्षों को मिलाकर करीब 60 हजार के आसपास पार्टी पदाधिकारियों को न्योता दिया गया है। इनके अलावा जयपुर और आसपास के जिलों से भी कार्यकर्ताओं को बुलाया गया है।

वैसे बूथ, ब्लॉक और मंडल अध्यक्षों के जरिए कांग्रेस 60 हजार लोगों को बुलाने की बात तो कर रही है, लेकिन असल में कांग्रेस ने जयपुर और आसपास के जिलों के नेताओं को भीड़ लाने का लक्ष्य दिया है। जयपुर शहर में ही हर विधानसभा से हर विधायक या विधायक प्रत्याशी को कम से कम 3 हजार लोग लाने को कहा गया है। लेकिन, दो दिन पहले ही जयपुर में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के एक कार्यक्रम में जयपुर के तीन मंत्री 500 लोग भी नहीं जुटा पाए थे, तो वो ही नेता एक-एक विधानसभा क्षेत्र से 3 हजार लोग ला पाएंगे, इसमें संशय नज़र आ रहा है।

इस सभा और शिलान्यास कार्यक्रम के बाद राहुल गांधी सेंट्रल पार्क में बनी गांधी वाटिका में भी जाएंगे, जहाँ, गांधी वाटिका के लोकार्पण का कार्यक्रम रखा गया है।

प्र.मंत्री मोदी ने पूर्ण बहुमत की सरकार के फायदे गिनाये

मोदी ने महिला आरक्षण विधेयक का उदाहरण देते हुये कहा कि, पूर्ण बहुमत की सरकार नहीं होती तो शायद ऐसा ऐतिहासिक विधेयक कभी पारित नहीं हो पाता

■ **महिला आरक्षण विधेयक पारित होने पर भाजपा की महिला इकाई ने दिल्ली में भाजपा मुख्यालय में प्र.मंत्री मोदी के स्वागत का कार्यक्रम आयोजित किया।**

नई दिल्ली, 22 सितंबर (वार्ता)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने नारीशक्ति वंदन अधिनियम को उभरते भारत की लोकतांत्रिक प्रतिबद्धता का प्रतीक करार दिया है और चेताया है कि देश को आगे ले जाने के लिए ऐसे निर्णायक कानून बनाने में सक्षम पूर्ण बहुमत वाली मजबूत सरकार बहुत आवश्यक है। मोदी ने आज सुबह यहां भाजपा मुख्यालय में आयोजित भाजपा महिला मोर्चा के अभिनंदन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए यी बात कही। मोदी के सुबह भाजपा मुख्यालय में पहुंचने पर बड़ी संख्या में महिला कार्यकर्ताओं ने मोदी का फूल बरसा कर भव्य स्वागत किया।

भाजपा अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा और महिला मोर्चा की राष्ट्रीय अध्यक्ष वनती श्रीनिवासन ने प्रधानमंत्री की अगवानी की। पार्टी मुख्यालय में केन्द्रीय मंत्रिमंडल की सभी महिला मंत्री और पार्टी की सभी महिला सांसद भी उपस्थित थीं। कार्यक्रम में महिला कार्यकर्ताओं ने मोदी को एक बड़ी सी माला पहना कर उनका अभिनंदन किया। मंच पर वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण, महिला एवं बाल विकास मंत्री स्मृति ईरानी भी मौजूद थीं।

प्रधानमंत्री ने नारी शक्ति वंदन-अभिनंदन कार्यक्रम में उपस्थित महिला वृंद को संबोधित करते महिला आरक्षण विधेयक के सर्वसम्मति से पारित होने को एक ऐतिहासिक क्षण बताया और कहा कि यह देश के लिए एक विशेष क्षण, भाजपा कार्यकर्ताओं के लिए एक विशेष दिन है।

उन्होंने कहा, मैं आज देश की हर माता को, बहन को, बेटी को बहुत-बहुत बधाई देता हूं। कल और परसो हम सबने एक नया इतिहास बनते देखा है और हम सबका सौभाग्य है कि ये इतिहास बनाने का अवसर कोटि-कोटि जनों ने हमें दिया है। आने वाली अनेकों पीढ़ियों तक इस निर्णय और इस दिवस की चर्चा होगी। मैं पूरे देश को नारी शक्ति वंदन अधिनियम संसद के दोनों सदनों में भारी बहुमत से पारित होने की बहुत बहुत बधाई देता हूं।

मोदी ने कहा, कभी-कभी किसी निर्णय में देश के भाग्य को बदलने की क्षमता होती है। आज हम सभी ऐसे ही एक निर्णय के साक्षी बने हैं। ....संसद के दोनों सदनों द्वारा नारी शक्ति वंदन अधिनियम रिकॉर्ड मतों से पारित किया जा चुका है। जिस बात का देश को पिछले कई दशकों से इंतजार था, वो सपना अब सच हुआ है। आज हर नारी का आत्मविश्वास आसमान छू रहा है। पूरे देश की माताएं, बहनें और बेटियां आज खुशी मना रही हैं, हम सबको आशीर्वाद दे रही हैं।

उन्होंने कहा, कोटि-कोटि माताओं, बहनों के सपने को पूरा करने का सौभाग्य हमारी भाजपा सरकार को मिला है। इसलिए राष्ट्र को सर्वप्रथम मानने वाली पार्टी के रूप में, भाजपा कार्यकर्ता के रूप में, एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में ये हमारे लिए गर्व का विषय है।

मोदी ने इस बात पर ज़ोर दिया कि नारी शक्ति वंदन अधिनियम कोई सामान्य कानून नहीं है। ये नए भारत की नई लोकतांत्रिक प्रतिबद्धता का उद्घोष है। ये अमृतकाल में सबका प्रयास से विकसित भारत के निर्माण की तरफ बढ़ा कदम है। लोकतंत्र में महिलाओं की भागीदारी के लिए, इस कानून के लिए तीन दशक से प्रयास कर रही थी। ये हमारी प्रतिबद्धता थी। इसे हमने पूरा करके दिखाया है। उन्होंने कहा कि यह कानून उभरते भारत की नवीकृत लोकतांत्रिक प्रतिबद्धता का प्रतीक है। यह महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास के एक नए युग की शुरुआत करने की उनकी प्रतिबद्धता का एक ठोस प्रमाण है, जिसका लक्ष्य महिलाओं के जीवन स्तर और जीवन की समग्र गुणवत्ता को बढ़ाना है।

राष्ट्रदूत (एचयूएफ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, जी-1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौन सिटी, जिला करौली से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2008/27147 जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय: राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन226422,226423, फैक्स: 02973-226424 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908

बड़ी बचत

ALTO K10	S-PRESSO	SWIFT	WAGONR	CELERIO	EECO
₹62 000*	₹71 000*	₹52 000*	₹51 000*	₹66 000*	₹34 000*

WAGONR ALTO K10 S-PRESSO ERTIGA BREZZA SWIFT DZIRE CELERIO EECO

E-book today at www.marutisuzuki.com or visit your nearest Maruti Suzuki dealership

MARUTI SUZUKI AUTHORIZED DEALERS: KOTA: BHATIA & COMPANY: CORPORATE OFFICE: 23-24, INDUSTRIAL ESTATE: 7230006839, 9829818018, 9784598109, 9829099081, 9829045729, 9829187004. DAKANIYA SHOWROOM: G-11-12, AUTO MOBILE ZONE, NEAR DAKANIYA STATION: 9001997116, 9001997113, 9587898054. **SUWALKA MOTORS PVT. LTD.:** KUNHARI: 0744-2370272, 9116312345, 7300308888. SULTANPUR: 9116178527. BHAWANIMANDI: 9116178557. KHANPUR: 07430-299240, 8306333715. **JODHPUR: AURIC MOTORS PVT LIMITED:** SARASWATI NAGAR, NEW PALI ROAD: 0291- 2722691, 9015900500. BALESAR: 6377715171. AHORE: 9015900500. SAYLA: 9015900500. **SHRI KRISHNA AUTO SALES PVT. LTD.:** PRATAP NAGAR: 0291-2762064/65, 9929244403, 9829144436. PHALODI: 9928841300, 9116150669, 9929244402. **L.M.J. SERVICES LTD:** A-11, INDUSTRIAL ESTATE, OPP. UDYOG BHAWAN, NEW POWER HOUSE ROAD: 8094011123, 8094011151, 0291- 2630478/79/80. **NAGAUR: MANGALAM MOTORS**: 9116008626, 9116008630. **PALI: L.M.J. SERVICES LTD.:** 02932 - 256177, 8094011136. **SIROHI: NAVNEET MOTORS:** 02972-222917-18, 7665010638. **UDAIPUR: NAVNEET MOTORS**: MADRI: 0294-2494454, 7230046380. SHOBHAGPURA: 9829043600. **TECHNOY MOTORS:** GOVARDHAN VILLAS: (0294) 2485158, 2485738, 9982666809. **BANSWARA: NAVNEET MOTORS**: 9414159145, 7665010632, 7412074100. **BHILWARA: LOHIA AUTOMOBILES**: 01482-264061, 264144, 09799545333, 09950512555. **CHAMPION CARS**: 01482-267135, 9602892423, 7727863720. **BHARATPUR: TM MOTORS:** 05644-220970, 226392, 9251423393, 9251423395, 8094000626. **CHITTORGARH: BHATIA & COMPANY**: 9414130799, 9001791753, 9587208999, 9414179006, 9413316117. **SAWAI MADHOPUR: PREM MOTORS PVT. LTD.:** SAWAI MADHOPUR: 07462-220029/8058799005/8058794181. **JAIPUR: VIPUL MOTORS PVT. LTD.:** DAUSA: 9773364861. LALSOT: 9773364863. BANDIKUI: 9773364864. MAHWA: 9773364862. MEHANDIPUR BALAJI: 9773364865. UNIARA: 7742944482. **KTL AUTOMOBILE PVT. LTD.:** PHULERA: 7412077062. SAMBHAR: 7412068410. ACHROL: 7412077078. **FORTUNE CARS:** KARAULI: 8875001175/ 8875005132. HINDAUN: 9214794314/8875007758. **PREM MOTORS PVT. LTD.:** BASSI: 8058794137. SAWAI MADHOPUR: 07462-220029 / 8058799005 / 8058794181. GANGAPUR CITY: 8058794021. BAGRU: 8058401166. KOTPUTLI: 8058794121. JOBNER: 8058796065. RENWAL: 8058600117. RENWAL-MANJHI: 8058794042. DUDU: 8058406655. PHAGI: 8058403338. KANOTA: 8058794167. TUNGA: 8058794137. **K.P. AUTOMOTIVES PVT. LTD.:** TONK: 9549651924. CHAKSU: 9549651926. SHAHPURA: 8696925275. DEOLI: 8696934957. MALPURA: 9549650513. NIWAI: 9667777114. PAOTA: 9549650495. VIRATNAGAR: 6350612446. JAMWA RAMGARH: 6350612727. **SANGA AUTONATION:** 9057809150, 7734901000. **CHURU: TRS CHURU:** 9356501550. **BIKANER: DUDI AUTOMOBILES:** 0151-2942222, 0151 -3550418, 7412075151. PADAMPUR: 7412075151. **AURIC MOTORS**: 0151-2251819, 9529251819, 9636045111. **AJMER: RELAN MOTORS**: 0145-2610106, 9214444222. **AJMER AUTO**: 0145-2425200, 9314531845, 9314391004. **ALWAR: MG MOTORS:** 9001795515, 9001795517, 8003692651, 8003692652, 8003090466. **SRIGANGANAGAR: AURIC MOTORS**: 8955559963. **DUDI AUTOMOBILES:** PADAMPUR: 7412075151. **SIKAR: JAMU AUTOMOBILES**: (01572) 245515 / 246219. **NEEM KA THANA: JAMU AUTOMOBILES**: 9785644715. **JHUNJHUNU: AURIC MOTORS**: 8955664400.

*Applicable Terms and conditions available at Maruti Suzuki Arena authorized dealer. Maruti Suzuki reserves the right to withdraw offers at any point in time without any advance notice. It is inclusive of Consumer offer, Exchange bonus, Corporate offer/Rural offer (wherever applicable). All offers are applicable till 30th September 2023 or till stocks last. Offers applicable on selected models/variants and selected cities. Car models and accessories shown may vary from the actual product. Black glass on the vehicle is due to lighting effect. Images used are for illustration purpose only. ^All loans and schemes are at the sole discretion of the Finance Partner.